



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

ग्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 35

अंक : 71 वाँ

संयुक्तांक (अप्रैल, 2024-सितम्बर, 2024)



नया नालंदा विश्वविद्यालय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

प्रहरी परिवार



श्री राज कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



श्री अजय कुमार झा
वरिष्ठ उपमहालेखाकार



श्री शिव शंकर
वरिष्ठ उपमहालेखाकार



श्री ओंकार
उपमहालेखाकार



श्री सुजय कुमार सिन्हा
उपमहालेखाकार



श्री पीयूष कुमार राय
उपमहालेखाकार



श्री राकेश रौशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री सुजीत कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री मनोज कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी



श्री दिलीप कुमार
कनिष्ठ अनुवादक



सुश्री अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

71वाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
महालेखाकार भवन,
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

71वाँ

प्रहरी

03



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 35

अंक : 71 वाँ

संयुक्तांक (अप्रैल, 2024-सितम्बर, 2024)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री राज कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री अजय कुमार झा

श्री शिव शंकर

श्री ओंकार

श्री सुजय कुमार सिन्हा

श्री पीयूष कुमार राय

श्री राकेश रोशन

श्री दिवाकर राय

श्री सुजीत कुमार

वरिष्ठ उपमहालेखाकार

वरिष्ठ उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1

श्री राजू कुमार सिंह

श्री शंकरा नन्द झा

श्री दिलीप कुमार

सुश्री अर्कजा आकृति

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिन्दी अधिकारी

कनिष्ठ अनुवादक

कनिष्ठ अनुवादक

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

प्रकाशन : प्रहरी

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

आवरण पृष्ठ : नये नालन्दा विश्वविद्यालय का तस्वीर

साज-सज्जा : निशा ग्राफिक्स, नाला रोड, पटना-4, मो०-9708124620

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की निरंतर सेवा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादक मंडल

साभार: पत्रिका में प्रकाशित कुछ चित्र गूगल साइट से लिये गये हैं। इसका उपयोग गैर व्यवसायिक है।

71वाँ

प्रहरी

04

इस अंक में

क्रम0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या सं0
1.	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार	संदेश	राज कुमार	6
2.	वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना	संदेश	अजय कुमार झा	7
3.	आपका पत्र मिला	पत्र		8
4.	सम्पादक की कलम से	संपादकीय	मनोज कुमार	9
5.	कामकाजी दंपतियों के लिए वरदान—क्रेच	लेख	मोनिया रानी	10
6.	दरकता विश्वास	कविता	जयप्रकाश मल्ल	11
7.	कार्यालय का महत्त्वपूर्ण अंग है डायरी और प्रेषण	लेख	शिव शंकर राय	12
8.	ग़ज़ल	ग़ज़ल	अताउल्ला हुसैन	13
9.	ग़ज़ल	ग़ज़ल	रूपेश कुमार सिंह	14
10.	गाँव की सिसकी	कविता	मनोज कुमार नं. 1	15
11.	ग्लोबल वार्मिंग: पर्यावरण की मौजूदा चुनौती	लेख	अर्कजा आकृति	16
12.	नया नालंदा विश्वविद्यालय	लेख	संपादक मण्डल	18
13.	नागालैंड यात्रा	लेख	पंकज कुमार सिंह	20
14.	नीली रोशनी के दुष्प्रभाव में फँसती आज की पीढ़ी	लेख	आदित्य शरण कौशलेश	22
15.	प्रकाश क्या है	लेख	रंजन कुमार	24
16.	फिर एक बार सृजन की आस है...	कविता	दिब्या नाथ	25
17.	फुटपाथ पर	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	26
18.	बचपन के सपने	लेख	शिव कुमार सिंह नं. 2	27
19.	भूला नहीं पाता हूँ	कविता	रामौतार प्रसाद	28
20.	महाकाल भस्म आरती का दिव्य दर्शन	लेख	मनोज कुमार नं.—6	29
21.	प्रार्थना	कविता	गोपाल कुमार	32
22.	मिथिला पेंटिंग	लेख	मनीषा कुमारी	33
23.	स्वयं	कविता	श्रीमती हीरा कुमारी	34
24.	यात्रा देवभूमि की—भागीरथी	लेख	के0 एम0 जयपुरियार	35
25.	सार्वजनिक वित्त	लेख	गौरव कुमार महतो	37
26.	सूफी संतो की पवित्र भूमि मनेर	लेख	भूषण प्रसाद	40
27.	हिन्दी हय हमर मातृभाषा	कविता	कुमार शैलेंद्र चन्द	42
28.	सरदार वल्लभभाई पटेल और लोकतंत्र	लेख	संजीव कुमार	43
29.	तुम मेरे पास हो	कविता	शिव शरण सिन्हा	44
30.	कैसे काटूँ समय	लेख	प्रशांत प्रखर	45
31.	वार्षिक खेल—कूद महोत्सव 2023—24	लेख	शंकरा नन्द झा	48
32.	हिंदी पखवाड़ा—2024	फोटो		51—52

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार



संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के 71 वें अंक के संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। 'प्रहरी' पत्रिका का हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक सराहनीय योगदान रहा है। इसके प्रकाशन से कार्मिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को निरन्तर बढ़ाना हम सब का संवैधानिक दायित्व है। 'प्रहरी' इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक सशक्त माध्यम की भूमिका अदा करती है। कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने में 'प्रहरी' की भूमिका प्रशंसनीय है। इसके माध्यम से कार्मिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी मदद मिलती है।

मुझे आशा है कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों के लिए रुचिकर और ज्ञानवर्धक साबित होंगी। कार्यालय के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से पत्रिका के इस अंक को सँवारने में बहुमूल्य योगदान दिया है, उन सबको मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ। मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मण्डल एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

जय हिन्द !


(राज कुमार)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना



संदेश

‘प्रहरी’ पत्रिका के 71 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक के माध्यम से हमें कार्यालयीन हिंदी के उपयोग में निरंतर प्रगति की आशा है। ‘प्रहरी’ पत्रिका, न केवल हमारे कर्मचारियों की सृजनशीलता और रचनात्मकता को एक सशक्त मंच प्रदान करती है, बल्कि यह हमारे संवैधानिक दायित्व और अस्मिता को भी संजोने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

हिंदी हमारे देश की राजभाषा के रूप में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। यह हमारी सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था की भाषा है, जो हमें एक सशक्त और सुसंगठित समाज की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती है। राजभाषा हिंदी का उपयोग न केवल हमारे संवैधानिक दायित्व को पूरा करता है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी जीवित और सशक्त बनाता है। हिंदी में कार्य करना हमारी अस्मिता को प्रकट करने और हमारी अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने का भी एक साधन है।

इस पत्रिका की सफलता के लिए मैं संपादक मंडल, सुधी पाठकों और रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

अजय झा
(अजय कुमार झा)

आपका पत्र मिला



कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड



"महालेखाकार भवन", कोलागढ़, देहरादून-248195

पत्रांक: 26/रि०प्र०/2024-25/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/63

दिनांक: 28.05.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, वीरचंद्र पटेल मार्ग,
पटना - 800001

विषय:- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 70वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "प्रहरी" का 70वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहीय है तथा राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

5/24/05/24
हिंदी अधिकारी



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता - 700 001

मं. हिंदी कक्षा/हिंदी पत्रिका/पावती/64
दिनांक: 28.05.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
महालेखाकार भवन,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना-800001

विषय:- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" (ई-पत्रिका) के 70वें अंक की पावती संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय का पत्रांक- हिं.अ/ले.प./प्रहरी/34/2023-24/118, दिनांक 09.05.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "प्रहरी" (ई-पत्रिका) के 70वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "प्रहरी" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से श्री विकास कुमार की रचना "शिखर", श्रीमती दिव्या नाथ की रचना "श्रम का नहीं कोई जोड़", श्री शंकरानंद झा की रचना "शहरी परिवहन: समस्याएँ एवं निदान", श्री सुबोध कुमार की रचना "सोशल मीडिया का सही उपयोग", श्री रंजन कुमार की रचना "कहाँ से और कैसे" इत्यादि सराहनीय हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय
हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.

53, अरेरा हिल्स, नर्मदापुरम रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 78

दिनांक 21.05.2024

प्रति,

हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
वीरचंद्र पटेल मार्ग, पटना-800001

विषय: "प्रहरी" के 70वें अंक की पावती बाबत।

संदर्भ: आप के पत्र सं. हिं.अ/ले.प./प्रहरी.34/2023-24/118 दिनांक 09.05.2024।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "प्रहरी" के 70वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और लेखापरीक्षा, शिखर, दो अनचाहे मेहमान, रिटायर्ड, आधुनिक दुनिया में कम होता धैर्य, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

पुष्प
हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष



भारत सरकार/GOVT.OF INDIA

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर- 751001

O/O THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR-751001

सं-रा.भा.अ.प.प्रति./37/2024-25/92

दिनांक: 10.06.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना-800001

विषय:- कार्यालयीन गृह पत्रिका "प्रहरी" के 70वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली कार्यालयीन गृह पत्रिका "प्रहरी" के 70वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे महत्वपूर्ण विषयों को समाहित करना अनुलनीय है। पत्रिका की समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं विशेष रूप से "रिटायर्ड, खामोशी, शहरी परिवहन: समस्याएँ एवं निदान, दो अनचाहे मेहमान" आदि रचनाएं रोचक, सारगर्भित, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

पुष्प
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

71वाँ

प्रहरी

08

सम्पादक की कलम से.....



1949 में संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था, जिसके पीछे यह उद्देश्य था कि देश की एक बड़ी आबादी की भाषा को सरकारी कार्यों का माध्यम बनाया जाए। आज भी, हिन्दी प्रशासनिक कार्यों और संचार का प्रमुख साधन है। हालाँकि, भारत में कई भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन हिन्दी का प्रसार और प्रभाव ऐसा है कि यह विभिन्न भाषाओं और बोलियों के बीच सेतु का कार्य करती है।

यद्यपि हिन्दी भारत में व्यापक रूप से बोली और समझी जाती है परंतु इसके विकास के लिए कुछ चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक हिन्दी में पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है। मध्य प्रदेश सरकार ने चिकित्सा की पढ़ाई हिन्दी में प्रारम्भ किया है जो की स्वागत योग्य कदम है। इसी तरह भारत के मुख्य न्यायाधीश डॉ. डी वाई चंद्रचूड़ ने न्यायिक शिक्षा और कार्यवाही को क्षेत्रीय भाषाओं में करने की वकालत की थी। उन्होंने कहा था कि स्थानीय भाषाएं देश में न्याय वितरण को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इस प्रकार हिन्दी यदि तकनीक और विधि की भाषा बनती है तो इससे देश की उन्नति तेजी से संभव हो सकेगी। सभी विकसित देशों ने प्रगति तभी पाई है जब अपनी भाषा को अपनाया है।

यह भाषा संतों, कवियों और लेखकों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम रही है। तुलसीदास, सूरदास, कबीर और प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकारों ने हिन्दी में अपने विचार व्यक्त करके समाज को दिशा दी है। हिन्दी न केवल भारत के साहित्यिक

आंदोलन का हिस्सा रही है, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी यह जनमानस को एकजुट करने का सशक्त माध्यम बनी। यह एक ऐसा माध्यम है जो देश की विभिन्न संस्कृतियों को आपस में जोड़ता है और राष्ट्रीय भावना को प्रबल करता है।

प्रहरी के इस अंक में अनेक नए रचनाकारों ने लेख, कविता, यात्रा संस्मरण इत्यादि देकर पत्रिका को ज्ञानवर्धक बनाया है। उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। पत्रिका के संरक्षक तथा परामर्शदात्री समिति के सदस्यों के द्वारा समय समय पर दिये गए सुझावों से पत्रिका को बेहतर बनाने में मदद मिलती है इसके लिए भी उनका आभारी हूँ। संपादक मण्डल के सदस्यों तथा सामान्य अनुभाग के सहकर्मियों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ उनके सहयोग से ही पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाता है।

आपका

(मनोज कुमार)

कामकाजी दंपतियों के लिए वरदान-क्रेच



मोनिया रानी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्रेच (creche) का शाब्दिक अर्थ शिशुघर, शिशुसदन, बालवाड़ी है जहां महिलाएं घर से बाहर काम करते जाने के समय अपने छोटे बच्चों को देखभाल के लिए रख जाती हैं। जब से एकल परिवारों का चलन बढ़ा और शहरों में महिलाएं भी अधिक संख्या में कामकाजी होने लगी तब से इस तरह के शिशु घर की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। भारत सरकार के सरकारी कार्यालयों में काम करने वाली महिलाओं के बच्चों के लिए यह एक महत्वपूर्ण सुविधा है। यह सुविधा महिलाओं को अपने पेशेवर जीवन को संतुलित रखने में मदद करती है, खासकर जब उनके पास छोटे बच्चे होते हैं। यह महिला कर्मचारियों को अपने काम में समर्थन और आत्मविश्वास प्राप्त करने में भी सहायक होता है, जिससे उनका पेशेवर विकास होता है। यह सुविधा उनकी प्रतिष्ठा और समाज में भागीदारी को भी बढ़ाती है। सरकारी कार्यालयों में काम करने वाली महिलाओं के बच्चों के लिए विशेष प्रावधान की

आवश्यकता को समझा गया है। मातृत्व लाभ अधिनियम (संशोधन) 2017 की धारा 11ए के अनुसार 50 या उससे अधिक कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठानों में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए क्रेच होना आवश्यक है।

क्रेच की परिभाषा— क्रेच एक तरह का देखभाल केंद्र है जो बच्चों के लिए सुरक्षित और पोषण वाला वातावरण प्रदान करता है, जब उनके माता-पिता या अभिभावक काम पर होते हैं। ये सुविधाएँ बच्चों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती हैं, पूरक पौष्टिक भोजन प्रदान करती हैं और एक सुरक्षित और संरक्षित वातावरण बनाए रखती हैं। यहाँ बच्चों को खाना, विभिन्न शिक्षात्मक गतिविधियाँ और खेल-कूद की सुविधाएँ मिलती हैं जो उनके समृद्ध विकास में मददगार साबित होती हैं। आधुनिक परिदृश्य में जहाँ महिलाएं, पुरुषों के साथ-साथ कंधे से कंधा मिला कार्य कर रही हैं, वहाँ उनके कार्य-जीवन संतुलन को कर्मचारी कल्याण के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत में केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए क्रेच सुविधाओं का प्रावधान एक महत्वपूर्ण और प्रगतिशील पहल के रूप में वरदान से कम नहीं है क्योंकि बच्चों के देखभाल में माँ की भूमिका पिता से अधिक होती है। उन्हें अपने पेशेवर कर्तव्यों को पारिवारिक प्रतिबद्धताओं के साथ संतुलित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। क्रेच सुविधा काम के घंटों के दौरान कर्मचारियों के बच्चों के लिए एक अभयारण्य के रूप में कार्य करती है, यह माता-पिता की मानसिक शांति दोनों को बढ़ावा देती है।



मातृत्व अवकाश के बाद काम पर लौटने वाली माताओं के लिए यह सहायता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिससे उन्हें चाइल्ड केअर से समझौता किए बिना अपना करियर जारी रखने में मदद मिलती है। क्रेच सुविधाओं का एक प्रमुख लाभ यह है कि वे कर्मचारियों को सुविधा प्रदान करती हैं। कार्यस्थल के भीतर या नज़दीकी क्षेत्र में चाइल्ड केअर सेवाएँ प्रदान करके, सरकार पेरेंटिंग और पेशेवर जिम्मेदारियों के सहज एकीकरण की सुविधा प्रदान करती है। यह निकटता न केवल माता-पिता के लिए आने-जाने के समय को बचाती है, बल्कि यह सुरक्षा की भावना भी पैदा करती है कि उनके बच्चे पास में हैं और उन तक पहुँच सकते हैं। क्रेच में सुरक्षा और निगरानी सुनिश्चित करने के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य है। माता-पिता उसके माध्यम से अपने मोबाइल पर भी अपने कार्यस्थल से क्रेच में बच्चों की निगरानी कर सकते हैं।

एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया क्रेच एक स्थापित और प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करता है जहाँ बच्चे उम्र के अनुसार विभिन्न गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं, जो उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देते हैं। इन क्रेचों में प्रशिक्षित देखभालकर्ता यह सुनिश्चित करते हैं कि हर बच्चे को व्यक्तिगत ध्यान और देखभाल मिले, जिससे उन्हें एक सुरक्षित और घर जैसा माहौल मिले। इस प्रकार की पहल न केवल सार्वजनिक क्षेत्र में कुशल पेशेवरों को आकर्षित करती हैं, बल्कि कर्मचारियों को भी संतुष्टि और संस्थान में बने रहने की भावना को बढ़ाती हैं।

क्रेचों की सुविधाएँ लैंगिक समानता के मामले में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इनके माध्यम से, महिलाएं और पुरुष दोनों को प्रोफेशनल और पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने में मदद मिलती है। अगर क्रेच की सुविधाएँ नहीं होतीं तो व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन, खासकर महिलाओं के लिए, अधिक चुनौतीपूर्ण होते।

दरकता विश्वास



✍ जयप्रकाश मल्ल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(सेवानिवृत्त)

मेरे दिल का दर्द, तुम्हारे,
चटखारे और किस्से हैं।
रोम रोम में फैली पीड़ा,
अब वक्तव्यों के हिस्से हैं।।

उम्मीद जगाई वादों ने,
कर्मों ने दंडित कर डाला।
बेचैन हृदय, खंडित मानस,
बेकार जवानी तुमसे है।।

आसन शासन औ राज रंग से,
रग-रग में विष फैला दी है।
किनके लिए हमारा दोहन,
ये प्रीति घनेरी किससे है।।

उनके और हमारे बीच की,
चौड़ी इतनी खाई कर दी।
क्या पाट सकेगा इसको कोई,
यह खड़ी चुनौती कबसे है।।

शौर्य और संघर्ष ही केवल,
उपचार मर्ज का बचा हुआ।
कर द्वेष और नफरत से दूरी,
शक्ति समागम इससे है।।

कोयल फिर से तान बिखरे,
फूलों की खुशबू भी फैले।
आने वाली पीढ़ी के पथ,
कुछ और सुगम सुरभित से हों।।

कार्यालय का महत्वपूर्ण अंग है डायरी और प्रेषण



शिव शंकर राय
पर्यवेक्षक

डायरी और प्रेषण (डिस्पैच) प्रणाली देश की केंद्र या राज्य सरकार में प्रशासनिक प्रक्रियाओं का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह व्यवस्था आने वाले और जाने वाले आधिकारिक पत्राचार के कुशल प्रबंधन को सुनिश्चित करता है, जिससे सरकारी विभागों के भीतर संचार का एक व्यवस्थित प्रवाह बना रहता है। सुशासन, निर्णय लेने और जवाबदेही के लिए उचित दस्तावेजीकरण और समय पर सूचना का प्रेषण महत्वपूर्ण है।

डायरी प्रणाली

डायरी व्यवस्था में सरकारी कार्यालय में प्राप्त होने वाले सभी दस्तावेजों, पत्रों और संचारों की व्यवस्थित दस्तावेजीकरण शामिल है। पत्राचार का हर टुकड़ा, चाहे वह भौतिक हो या इलेक्ट्रॉनिक, एक डायरी रजिस्टर में दर्ज किया जाता है, जो प्राप्त सभी संचारों का आधिकारिक रिकॉर्ड होता है। डायरी व्यवस्था के प्रमुख पहलुओं में प्राप्त पत्रों का पंजीकरण करना सर्वप्रथम कार्य है।

कार्यालय में आने वाले प्रत्येक दस्तावेज को एक रजिस्टर में प्रविष्टि कर एक विशिष्ट पहचान संख्या दी जाती है, जिसे अक्सर डायरी नंबर कहा जाता है। इस नंबर का उपयोग भविष्य के संदर्भ और ट्रैकिंग के लिए किया जाता है। इस में डायरी नंबर के साथ-साथ प्राप्ति की तारीख, प्रेषक का नाम, विषय वस्तु और अन्य प्रासंगिक जानकारी जैसे महत्वपूर्ण विवरण दर्ज किए जाते हैं।

डायरी में दर्ज होने के बाद, पत्राचार को आगे की कार्रवाई के लिए संबंधित अनुभाग या अधिकारी को भेज दिया जाता है। डायरी प्रणाली पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देती है, क्योंकि इसके तहत पत्राचार के हर हिस्से को औपचारिक रूप से

रिकॉर्ड किया जाता है और कार्यालय में पत्रों के निष्पादन तक इससे नज़र रखी जा सकती है।

प्रेषण प्रणाली

दूसरी ओर, प्रेषण प्रणाली सरकारी कार्यालय से बाहर जाने वाले पत्राचार को संभालती है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी आधिकारिक सूचना, पत्र समय पर और व्यवस्थित तरीके से भेजे जाएँ। प्रेषण से पहले, दस्तावेज तैयार किए जाते हैं, उनकी समीक्षा की जाती है और उपयुक्त अधिकारियों द्वारा उन पर हस्ताक्षर किए जाते हैं। इसमें पत्र, आदेश, अधिसूचनाएँ और अन्य आधिकारिक संचार का मसौदा तैयार करना शामिल है।



डायरी प्रणाली की तरह, बाहर जाने वाले पत्राचार को भी प्रेषण रजिस्टर में दर्ज किया जाता है। प्रत्येक दस्तावेज़ को एक प्रेषण संख्या दी जाती है, और प्राप्तकर्ता का नाम, पता, विषय और प्रेषण की तारीख जैसे विवरण दर्ज किए जाते हैं। इसके बाद, दस्तावेज़ प्राप्तकर्ताओं को भेजे जाते हैं। इसमें डाक सेवाओं के माध्यम से भौतिक वितरण या ईमेल या अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसमिशन शामिल हो सकता है। कुछ मामलों में, प्राप्तकर्ता से प्राप्ति की पावती प्राप्त करना आवश्यक है, यह सुनिश्चित करते हुए कि संचार पत्र अपने गंतव्य तक पहुँच गया है।

डायरी और प्रेषण प्रणाली का महत्व

डायरी और प्रेषण प्रणाली केंद्र या राज्य सरकार के सुचारु कामकाज के लिए अतिआवश्यक है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी आधिकारिक संचार ठीक से प्रलेखित हो और कुशलतापूर्वक संभाले जाएँ। यह प्रणाली निर्णय लेने में देरी को कम करती है और विभिन्न सरकारी विभागों के बीच बेहतर समन्वय की सुविधा प्रदान करती है।

इसके अलावा, यह प्रणाली सरकारी कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सभी आने वाले और जाने वाले पत्राचार का विस्तृत रिकॉर्ड रखकर, सरकार यह सुनिश्चित कर सकती है कि सभी संचार पेशेवर और समयबद्ध तरीके से संभाले जाएँ।

निष्कर्षतः डायरी और प्रेषण प्रणाली केंद्र और राज्य सरकार के भीतर एक आवश्यक प्रशासनिक कार्य है। यह आधिकारिक पत्राचार के कुशल प्रबंधन को सुनिश्चित करता है, जिससे प्रभावी शासन में योगदान मिलता है। संगठित, पारदर्शी और जवाबदेह सरकारी संचालन को बनाए रखने के लिए इस प्रणाली का उचित कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है।



✍ अताउल्ला हुसैन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गज़ल

शिकस्त खाकर हुए बेमिसाल नया
हम करेंगे अब कोई कमाल नया

रोज़मर्रा की ज़िन्दगी भाती नहीं
करेंगे इजाद कुछ खूयाल नया

बगावत जवाबों से भी करेंगे
करेंगे अब पैदा सवाल नया

चोरी की दौलत ज़ाया न होगी
खरीदेंगे इससे कोतवाल नया

इश्क़ का पंछी ज़ख्मी न कर दे
रखेंगे तरकश नया जाल नया

गज़लों से लोग थकने लगे हैं
'हुसैन' कुछ शेर निकाल नया

ग़ज़ल



✍ रुपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

न बैठूंगा कभी भी हारकर, है फैसला मेरा
न टूटा है न टूटेगा कभी भी हौसला मेरा
ये राहे जिंदगानी है यहाँ ठोकर से क्या डरना
हर इक ठोकर पे बढ़ता जा रहा है तजुर्बा मेरा
ये दुनिया रोज उम्मीदों की इक दुनिया जलाती है
हुआ क्या जो ये मामूली सा बेबस दिल जला मेरा
पहेली सी है ये दुनिया, कभी पूरी ही अपनी है
कभी लगता है दुनिया में कहाँ कुछ भी रहा मेरा
मुझे जिंदादिली से यूँ मुहब्बत हो गई यारों
रुलाने में मुझे हर ग़म परेशाँ हो गया मेरा
जुनूँ है फ़ौज मेरी और मेरी हसरत सिकंदर है
मेरी मंजिल की खातिर रब बनेगा रहनुमा मेरा
मेरे मेहबूब तू मुझको अकेला क्यों समझता है
मुकम्मल इश्क़ तेरा है मुकम्मल काफ़िला मेरा
तेरी पहचान हूँ मैं और तू पहचान है मेरी
मैं तेरा आईना हूँ और तू है आईना मेरा
लगाया है गले जबसे खुदा की चाह को मैंने
न कोई सुख रहा मेरा न कोई दुख रहा मेरा
मेरी ग़ज़लों, मेरे शेरों में मेरी रूह बसती है
भला किस तरह इनसे हो सकेगा फासला मेरा

गाँव की सिसकी



✍ मनोज कुमार नं.-1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

गाँव की पगडंडियाँ खो गई,
शहर की चकाचौंध में सिसकियाँ खो गई।
हर खेत, हर घर अब उजड़ा है,
सपनों की नगरी में, यथार्थ भी लुटा है।

गाँव की गलियाँ अब सुनसान हैं,
शहर की सड़कों पर कदम, अनजान हैं।
गाँव की सौगातें कहीं खो गई,
जीवन की राहें अब रूठ गई।

चूल्हे की आंच, खेतों की हरियाली,
शहर की अट्टालिकाएँ, बजबजाती नाली।
गाँव की बंसी, अमराई में कोयल की कूक,
शहर की भीड़ में आत्मा की लगती बोली।

कभी खेतों में बिखरी हँसी की धुन,
अब मेट्रो की शोर में कहीं खो गई।
गाँव की धड़कनें, अब सुनाई देती नहीं,
शहर की शोर में खो गई है कहीं।

गाँव की सिसकी, शहर में दुबकी,
सपनों की निरंतरता, शोर में खोई।
कहाँ गई वो सुकून, वो शांति की रातें ?
गाँव की कहानियाँ, अब बन गई यादें।



ग्लोबल वार्मिंग: पर्यावरण की मौजूदा चुनौती



अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

“यदि हम पर्यावरण को नष्ट करते हैं तो हमारे पास समाज नहीं होगा। —मार्गरेट मीड”

जब जल वाष्प, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन और विशेष तौर पर कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसों वायुमंडल में जमा हो जाती हैं और सूर्य के प्रकाश और सौर विकिरण को अवशोषित कर लेती हैं, तब वातावरण के तापमान में वृद्धि देखी जाती है। तापमान को प्रभावित करने वाली इस प्राकृतिक प्रतिक्रिया को हम ग्रीनहाउस प्रभाव के रूप में जानते हैं। आमतौर पर सौर विकिरण अंतरिक्ष में विलुप्त हो जाता है किन्तु वातावरण में मौजूद प्रदूषक उसे वायुमंडल में कैद कर लेता है जिसका प्रभाव वर्षों से लेकर सदियों तक रहता है।

किसी ग्रह या उपग्रह के वातावरण में मौजूद ग्रीनहाउस गैसों उसके वातावरण के तापमान को अपेक्षाकृत अधिक गर्म बनाती हैं। इन ग्रीनहाउस गैसों के बिना हमारी पृथ्वी का तापमान बहुत कम होता और पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं होता। ग्रीनहाउस प्रभाव में कार्बन उत्सर्जन अहम भूमिका निभाता है।

पूरे विश्व के औसत तापमान में दर्ज की गई वृद्धि संभावित खतरे की ओर इशारा करती है जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। वैज्ञानिक हर वक्त ग्लोबल वार्मिंग के घातक परिणाम की चर्चा करते रहते हैं तथा जलवायु पर ग्रीनहाउस गैसों के विनाशकारी प्रभाव के नए सबूत भी प्राप्त करते रहते हैं। वैज्ञानिक सूखा, बाढ़, समय से पहले पिघलते बर्फ और लुप्त होते ग्लेशियर तथा जैविक प्रजातियाँ को ग्लोबल वार्मिंग के परिणाम के रूप में मानते हैं। समुद्र के स्तर बढ़ने को भी ग्लोबल वार्मिंग की प्रक्रिया से जोड़ा जाता है।

ऐसा कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि

मानव द्वारा उत्पादित अतिरिक्त ग्रीनहाउस गैसों के कारण औसत तापमान में वृद्धि हो रही है। कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित न कर पाना इस खतरे की मुख्य वजह है। यह हमारे पारिस्थितिक तंत्र को स्वेच्छा से खतरे में डालने जैसा प्रतीत होता है। हमें उन पहलू पर ध्यान देना होगा, जिसके कारण हम कार्बन उत्सर्जन को संतुलित करने में अक्षम साबित हो रहे हैं। जीवाश्म ईंधन का अनुचित उपयोग, औद्योगीकरण, वनों की कटाई, विनिर्माण और उत्पादन के तरीके में लापरवाही तथा बढ़ती जनसंख्या कुछ ऐसे कारणों में से हैं जो ग्लोबल वार्मिंग को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देते हैं।

जीवाश्म ईंधन जैसे तेल, पेट्रोलियम, कोयला आदि को बनने में लाखों साल लगते हैं और उनके उपयोग से पर्यावरण बहुत प्रदूषित होता है। जीवाश्म ईंधन को जलाने से उत्सर्जित धुएँ से न केवल





ओजोन परत में छेद होता है बल्कि गैस वायुमंडल में अवशोषित हो जाते हैं और ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करते हैं, जिससे पृथ्वी लगातार गर्म होती रहती है।

बढ़ती जनसंख्या ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार है। बढ़ती जनसंख्या का मतलब है बढ़ती जरूरतें। बढ़ती जनसंख्या की मांग को पूरा करने के लिए कभी पेड़ काटे जाते हैं, तो कभी कृषि पद्धति में जोखिम उठाना पड़ता है। औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण भी कहीं न कहीं बढ़ती जनसंख्या के ही अलग-अलग पहलू हैं।

कारखानों की प्रक्रियाएँ रोज़ टनों ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती हैं, जो अत्यधिक वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। 18वीं सदी की अंग्रेजी औद्योगिक क्रांति के मॉडल पर आधारित औद्योगिकीकरण प्रदूषण का एक सामान्य किन्तु घातक कारण सिद्ध हो रहा है।

शहरीकरण के लिए वनों की कटाई भी

कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित न कर पाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। पश्चिमी मॉडलों में अक्सर यह पाया जाता है कि शहर हरे पेड़ों के बजाय ग्रे इमारतों से भरे होते हैं। चूंकि पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, इसलिए वनों की कटाई निःसंदेह खतरनाक है और ग्लोबल वार्मिंग का एक बड़ा कारण है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारणों को समझने के साथ यह भी जरूरी है कि हम किस तरीके से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित कर सकते हैं ताकि जलवायु परिवर्तन के भयावह प्रभाव से बचा जा सके। कार्बन उत्सर्जन को कम करने में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना जरूरी है। जीवाश्म ईंधन का विकल्प ही हमें बढ़ते तापमान से निजात दिलवा सकता है। पौधारोपण भी कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को वायुमंडल में घटाने के लिए बहुत जरूरी है।

2015 में फ्रांस के पेरिस में आयोजित COP 21 में 196 पक्षों द्वारा अपनाया गया 'पेरिस समझौता' एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है। इस संधि का लक्ष्य "वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2°C से नीचे रखना है। साथ ही इस संधि के अनुसार तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5°C तक सीमित रखने का प्रयास करना है। इस संधि का लक्ष्य 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को 40% तक घटाना भी है। यह संधि वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग रोकने का एक सार्थक प्रयास है।

महात्मा गांधी ने कहा था, "धरती जितना देती है वो किसी इंसान की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है पर लालच को पूरा करने के लिए नहीं।" अगर इस कथन पर गौर किया जाये तो हमें अपने स्वार्थ में प्रकृति का नुकसान दिखाई देगा। अगर हम सब ग्लोबल वार्मिंग को वाकई कम करना चाहते हैं तो नीतियों से अधिक व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी और कार्बन उत्सर्जन को घटाना पड़ेगा। नए पेड़-पौधे लगाने होंगे। ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोत को अपनाना होगा। ♦

नया नालंदा विश्वविद्यालय

—संपादक मण्डल



नालंदा विश्वविद्यालय का नाम सुनते ही प्राचीन भारत के उस महान शिक्षण संस्थान की याद आती है जो लगभग 800 वर्षों तक दुनियाभर के छात्रों को शिक्षा प्रदान करता रहा और समय के काल खंड में समाप्त हो गया। उस गौरवशाली विरासत को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से 21वीं सदी में 'नया नालंदा विश्वविद्यालय' की स्थापना का विचार सामने आया। इसका उद्देश्य वैश्विक शिक्षा में एक नया अध्याय जोड़ना और प्राचीन ज्ञान को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना था।

स्थापना और उद्देश्य

नया नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए 28 मार्च 2006 को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बिहार विधान मंडल के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए इस विचार का प्रस्ताव रखा। इसके बाद फिलीपींस में 2007 में

भारत और पूर्वी एशिया के देशों के 16 देशों के बीच एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इस प्रस्ताव पर चर्चा हुई। इस विचार को 2009 में थाईलैंड में पूर्वी देशों के चौथे सम्मेलन में शीघ्र ही समर्थन मिला। इस बीच बिहार विधान मण्डल ने नालंदा विश्वविद्यालय बिल को पारित कर केंद्र सरकार को भेज दिया। 26 अगस्त 2010 को भारतीय संसद ने नालंदा विश्वविद्यालय एक्ट को पास कर दिया और भारत सरकार ने इसे एक प्रमुख परियोजना के रूप में मान्यता दी। इस विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य न केवल प्राचीन नालंदा की विरासत को पुनर्जीवित करना था, बल्कि इसे एक आधुनिक केंद्र के रूप में विकसित करना था जहां प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का समन्वय हो सके।

विश्वविद्यालय का स्थान और परिसर

नया नालंदा विश्वविद्यालय बिहार के

राजगीर में स्थित है, जो कि प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के निकट है। इसका परिसर विशाल और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल है, जिसे इस प्रकार से डिजाइन किया गया है कि यह ऊर्जा की न्यूनतम खपत करे और प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो। परिसर में अत्याधुनिक सुविधाएं, हरे-भरे बगीचे, बड़े तालाब और एक शांतिपूर्ण शून्य कार्बन वातावरण प्रदान किया गया है जो छात्रों के लिए आदर्श है।

अकादमिक संरचना

नया नालंदा विश्वविद्यालय की अकादमिक संरचना भी प्राचीन नालंदा की तरह ही बहुआयामी है। यहां पर विभिन्न विषयों में स्नातक, परास्नातक और शोध कार्य की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। विश्वविद्यालय में प्रमुख विषयों में बौद्ध अध्ययन, ऐतिहासिक अध्ययन, पर्यावरणीय अध्ययन, और अंतरराष्ट्रीय संबंध शामिल हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल पारंपरिक शिक्षा प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि छात्र वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हों।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग और छात्रों का चयन

नालंदा विश्वविद्यालय का एक प्रमुख आकर्षण इसका अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण है। यह विश्वविद्यालय दुनिया भर के छात्रों और शिक्षकों को आकर्षित करता है और इसमें प्रवेश के लिए एक कड़ी चयन प्रक्रिया होती है। छात्रों का चयन उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और उनके भविष्य के लक्ष्यों के आधार पर किया जाता है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यहां पढ़ने वाले छात्र न केवल अपने विषय में विशेषज्ञ बनें, बल्कि वैश्विक समाज के लिए योगदान भी दें।

अनुसंधान और नवाचार

नालंदा विश्वविद्यालय में अनुसंधान और नवाचार को विशेष महत्व दिया जाता है। यहां के शिक्षकों और छात्रों को विभिन्न परियोजनाओं पर काम करने का अवसर मिलता है जो कि समाज और



विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे सकते हैं। विश्वविद्यालय में एक समर्पित अनुसंधान केंद्र है जो कि नवीनतम अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है और छात्रों को नई खोजों में शामिल होने के लिए प्रेरित करता है।

चुनौतियां और भविष्य

हालांकि नया नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना और इसका विकास एक सराहनीय प्रयास है, लेकिन इसके समक्ष कई चुनौतियां भी हैं। इनमें वित्तीय संसाधनों की कमी, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा, और पर्याप्त संख्या में छात्रों और शिक्षकों को आकर्षित करने की आवश्यकता शामिल है। इसके बावजूद, विश्वविद्यालय का भविष्य उज्ज्वल दिखता है, क्योंकि यह प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली और आधुनिक तकनीकी ज्ञान का समन्वय करने का प्रयास कर रहा है।

नया नालंदा विश्वविद्यालय भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली की पुनरुत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 19 जून 2024 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने सम्बोधन में कहा—“हम विकसित देशों को देखे तो ये पाएंगे, वे आर्थिक और सांस्कृतिक लीडर तब बनें, जब वे शिक्षा में लीडर बनें”। यह विश्वविद्यालय न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षिक केंद्र के रूप में उभर रहा है। अपने वैश्विक दृष्टिकोण, समृद्ध शैक्षणिक संरचना, और अनुसंधान पर विशेष ध्यान देने के कारण यह विश्वविद्यालय भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ:— इंडिया टुडे और विकिपीडिया ♦

नागालैंड यात्रा



✍ पंकज कुमार सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पर्यटन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। मैंने इसे आत्मसात ही नहीं किया है बल्कि जीवन का लक्ष्य मान लिया है। छोटी-छोटी चीजों को देखने, समझने और सीखने में पर्यटन का विशेष महत्व है। कई राज्यों और देशों ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया है। यह आर्थिक रूप से प्रगति में सभी देशों को काफी सहयोग कर रहा है।

उत्तरपूर्व भारत को देखने और संस्कृति को समझने की मेरी उत्कट इच्छा बहुत पहले से थी। मैं नागालैंड जाने के लिए दिनांक 16.11.2023 (4.30 सुबह) को पाटलिपुत्र रेलवे स्टेशन से दीमापुर(नागालैंड) के लिए रवाना हो गया। रेलगाड़ी बिलंब रहने के कारण रात को बारह बजे के बजाय दिनांक 17.11.23 के सुबह सात बजे पहुंचे। मूसलाधार वर्षा हो रही थी। इसी बीच हमारे चारपहिया वाहन चालक गाड़ी लेकर स्टेशन पर आ गये थे। हम भी सोचे की यात्रा तय कार्यक्रम के अनुसार आगे प्रस्थान किया जाये। हम कोहिमा के लिए प्रस्थान कर गये। मैथ्यू जी हमारे गाड़ी के ड्राईवर और मालिक सब वही थे। बड़े मिलनसार व्यक्ति थे। यात्रा शुरू करने के पहले ही पटना से ही उनकी गाड़ी बुक कर लिये थे। दीमापुर और कोहिमा के बीच रेल सेवा नहीं है। इस कारण सड़क मार्ग से यात्रा दो धंटा में पूरी की। पूरी यात्रा के दौरान वे हमारे साथ रहे। वे गाईड के रूप में भी हमें बताते रहे।

कोहिमा नागालैंड की राजधानी है और यह काफी विस्तृत क्षेत्रफल में फैला हुआ है। कोहिमा शहर में घूमने को बहुत कुछ है। यहाँ पर नागालैंड का म्यूजियम है उसके माध्यम से वहाँ के कला और संस्कृति को देखने और समझने में बड़ी सरलता हुई। द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की याद में वार सेमेटरी मेमोरियल बनाया गया जिसमें प्रत्येक सैनिक को सम्मानित किया गया है। विशालकाय बैटिस्ट चर्च

को भी देखने का मौका मिला। आमतौर पर, हर शहर में स्थानीय बाजार देखने का मौका मिलता है। यहाँ पर लोग कई प्रकार के जानवर खाते हैं। इन जानवरों में एक मैथून जानवर होता है जो कि हमलोग के यहाँ के साढ़ के जैसा होता है। उसका वजन आमतौर पर सात- आठ सौ किलो के लगभग होता है। नागावासी जब सामूहिक रूप से उत्सव मनाते हैं तो मैथून का मांस जरूर खाते हैं। नागालैंड में कोहिमा शहर से लगभग बारह किलो मीटर की दूरी पर नागा हैरिटेज गाँव है जहाँ पर हॉर्नबिल उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव सन् 2000 में शुरू किया गया था और प्रत्येक वर्ष एक दिसम्बर से दस दिसम्बर तक यह उत्सव



मनाया जाता है। नागालैंड में लगभग सत्रह जनजातियाँ हैं। सभी जनजाति की अपनी भाषा और संस्कृति है। इसलिए वहाँ नागामी भाषा का उदय हुआ जिसे सभी जनजाति बोल और समझ सके। हॉर्नबिल उत्सव बड़े ही उत्साह से मनाते हैं। इस उत्सव में देश-विदेश से लोग शामिल होते हैं। सभी जनजाति के लोगों का खान-पान और संस्कृति देखने का मौका मिलता है। स्थायी तौर पर सभी जनजाति का झोपड़ीनुमा निर्माण उत्सव में उनका प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ की अंगामी जनजाति सबसे विकसित जनजाति है। वैसे और भी जनजाति हैं जैसे कचारी, लोह, चाकेसंग, रंगमा, जेलियांग, कुकीईन। नागा लोग करीब साठ साल पहले हैंड हंटिंग किया करते थे। लेकिन अब प्रतिबंधित हो गया है। हैंड हंटिंग का मतलब सिर्फ मनुष्य का सर ही नहीं बल्कि अन्य जानवरों का सर काटकर अपने दरवाजे पर टांग दिया करते थे। मनुष्य के सिर का मतलब दो जनजातियों के बीच संघर्ष किसी पक्ष के द्वारा मारे गये व्यक्ति के सर को काट कर अपने घर के दरवाजा पर टांग दिया करते थे। इससे वे लोग गर्व महसूस किया करते थे। जानवरों का भी सर लोगों के घरों के दरवाजे पर टंगा हुआ देखने को मिल जायेगा। जानवरों का सर मुख्य तौर पर मैथून, बंदर का मिल जाया करता है। नागा हैरिटेज गाँव बहुत ही सुंदर जगह पर बना है। पहाड़ पर यह गाँव अद्भुत है। मैं यहाँ पर उत्सव शुरू होने के दस दिन पहले गया था। मैंने कुछ किलोमीटर की दूरी पर डाउन होमस्टे में कमरा बुक कराया था। मैंने पहले ही होमस्टे वाले को कह दिया था कि मैं शाकाहारी हूँ। वहाँ के लोग खान-पान में मसाले और तेल का उपयोग बहुत कम किया करते हैं।

दिनांक 18.11.23 सुबह में नास्ता करने के बाद हम फिर घुमने निकल पड़े। प्राकृतिक सुंदरता से भरा पूरा जगह मन को खुशियों और उल्लास से भर रहा था। आगे बढ़ते हुए हम जुलेखे (DZULEKHE) गए। यहाँ पर डी का उच्चारण नहीं होता है। पहाड़ों के बीच बहती हुई स्थानीय नदी की कलकल आवाज सुनकर जैसे लगा कि प्रकृति की गोद में समा गये। वहाँ पर स्थानीय लोगों के साथ फोटो भी खिचवाये।

वही पर पहाड़ पर चढ़ते हुए नागा वासी के घर गये, यहाँ चाय पीने के बाद आगे के लिए प्रस्थान कर गये। खोनोमा, कोहिमा जिला, नागालैंड का बहुत ही प्रसिद्ध जगह रहा है। यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ के लोग मुख्यतः अंगामी जनजाति से संबंध रखते हैं। यहाँ पर खोनोमा और अंग्रेज के बीच युद्ध हुआ था। खोनोमा वासी बहुत ही वीरतापूर्वक युद्ध लड़े थे। अंग्रेजों को युद्ध छोड़ कर वापस जाना पड़ा। आज भी वहाँ महसूस किया जा सकता है। झूम खेती का अवलोकन किया जा सकता है। इस जगह को हरित गाँव की उपाधि दिया जा चुका है। लोग भी बहुत मिलनसार हैं। हमने यहाँ एक रात बितायी।

दिनांक 19.11.23 को सुबह उठकर प्रकृति का पूरा आनंद उठाये। होटल के छत पर जा कर चारों दिशाओं का अवलोकन किया। इतना सुंदर दृश्य की पल-पल में मौसम का बदलाव देखने को मिला। ये तो हमेशा देखने को मिलता है कि हम बादलों के काफी ऊपर आ गये। खोनोमा गाँव भ्रमण किया, लोगों से मिला, बड़ा ही अच्छा महसूस हुआ। सुबह सात बजे हमारे लिये गाड़ी आ गयी। आगे की यात्रा के लिए हम घूमते हुए दीमापुर जिला पहुँच गये। इस जिला में एक कुटीर उद्योग है जहाँ कि बांस और लकड़ी से बने सामानों का केंद्र था या यू कहें कि बिक्री का केंद्र था। बहुत ही सुंदर सामग्री देखने को मिला। हमने भी कुछ वस्तुएं खरीदी। इसके बाद दीमापुर शहर की ओर चल पड़े। इस शहर में कचारी सभ्यता का अवशेष देखने को मिला। इस स्थान को सही ढंग से रखरखाव में कमी देखने को मिला। यह हमलोगों के लिए एक महत्वपूर्ण धरोहर है। यहाँ पर ही एक म्यूजियम देखते हुए हम दीमापुर रेलवे स्टेशन आ गये।

20.11.23 अहले सुबह को राजधानी एक्सप्रेस से पटना के लिए चल पड़े। रात के दस बजे पटना पहुँच गये। यात्रा का समापन हो गया। यात्रा से यही समझ में आया कि किसी जगह के बारे में हम खुद कल्पना कर सकते हैं। उस स्थान पर जाकर देखने से पता चलता है कि अंधकार से उजाला की ओर चले आये हैं। यात्रा शिक्षा का अद्भुत साधन है।

नीली रोशनी के दुष्प्रभाव में फँसती आज की पीढ़ी



✍ आदित्य शरण कौशलेश

सहायक पर्यवेक्षक

वर्तमान समय में मोबाईल फोन एक आवश्यक सामग्री के रूप में उपयोग होने लगा है। बैंक, रेलवे, या किसी भी सरकारी कार्य में मोबाइल नंबर मांगा जाता है। स्मार्टफोन के आने के बाद से मोबाईल की लोकप्रियता काफी बढ़ गई है क्योंकि स्मार्टफोन मनोरंजन का भी एक साधन हो गया है। घर हो, कॉलेज हो, दफ्तर हो, सभी जगह लोग स्मार्ट फोन का उपयोग हर समय करते रहते हैं। खास कर आज के युवा को इसकी लत लग गई है। छोटे-छोटे बच्चे भी इसके शिकार हो गए हैं। मोबाइल फोन से निकलती नीली रोशनी आज हमारे हर उम्र के व्यक्तियों को तरह-तरह के रोगों से घेरने लगी है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में, अखबारों में इस संबंध में डॉक्टर के लेख आने लगे हैं।

नीली रोशनी, खास तौर पर मोबाईल स्क्रीन से निकलने वाली रोशनी, ने आंखों के स्वास्थ्य और पूरे स्वास्थ्य पर इसके संभावित प्रभाव ने ध्यान आकर्षित किया है। कुछ खतरनाक प्रभावों पर एक नजर डाला जा सकता है।

आंखों के स्वास्थ्य पर प्रभावः—

मोबाईल से निकलने वाली नीली रोशनी के लंबे समय तक संपर्क में रहने से डिजिटल आई स्ट्रेन हो सकता है, जिसमें सूखी आंखें, धुंधली दृष्टि और सिरदर्द जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।



यह उच्च-ऊर्जा से युक्त प्रकाश के बिखरने के कारण होता है, जिससे देखने में असुविधा होती है क्योंकि हमारी आँखें किसी चीज पर ध्यान केंद्रित करने में अधिक मेहनत करती है।

रेटिना में छेद भी नीली रोशनी के लगातार संपर्क में रहने से हो सकती है। नीली रोशनी खास कर अंधेरे में आंख में गहराई तक प्रवेश कर रेटिना तक पहुँच सकती है। यह संभावित रूप से प्रकाश-संवेदनशील कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसी स्थिति दृष्टि के लिए हानि का कारण बन सकती है। लंबे समय तक नीली रोशनी के संपर्क में रहने से मोतियाबिंद हो सकता है, जो आंख के लेंस के धुंधला होने की वजह से दृष्टि को प्रभावित करता है। मोबाईल की नीली रोशनी पराबैंगनी प्रकाश मोतियाबिंद से ज्यादा जुड़ा हुआ है।

नींद आने में व्यवधान और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः—

नीली रोशनी के संपर्क में आने से, खासकर शाम या रात के दौरान, नींद आने में देरी हो सकती है, जिससे अनिद्रा या नींद की गुणवत्ता खराब हो सकती है।

अधिक रात तक मोबाईल की नीली रोशनी मेलाटोनिन के उत्पादन को दबाने के लिए जानी जाती है, यह एक हार्मोन है जो सोने-जागने के चक्र को नियंत्रित करता है।

शरीर की प्राकृतिक घड़ी, प्रकाश के संपर्क में आने के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती है। नीली रोशनी, विशेष रूप से, इस लय को बदल सकती है, जिससे रात में सोना और सुबह उठना मुश्किल हो जाता है। इससे मूड डिसऑर्डर, मोटापा और मेटाबोलिक

सिंड्रोम सहित कई स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती है। नींद के पैटर्न में गड़बड़ी अवसाद और चिंता के लक्षणों को बढ़ा सकती है। जिससे सीखने में कठिनाई, उत्पादकता में कमी और निर्णय लेने में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्मृति में कमी और डिमेन्शिया जैसे रोग धीरे धीरे बढ़ने का ये भी एक कारण है। कम नींद के कारण वाहन दुर्घटनाएँ भी हो सकती है।

वजन बढ़ना और मोटापा बढ़ना

मोबाईल की लत से युवाओं में शारीरिक गतिविधियों में कमी आई है। इससे वजन बढ़ सकता है और मोटापे का खतरा बढ़ सकता है। नींद में व्यवधान भूख और चयापचय को नियंत्रित करने वाले हार्मोन को बदल सकता है।

पुरानी बीमारियों का बढ़ाने का जोखिम

नीली रोशनी के लगातार संपर्क में रहने से, खासकर जब यह लंबे समय तक नींद में व्यवधान पैदा करता है, तो मधुमेह, हृदय रोग और यहां तक कि कुछ प्रकार के कैंसर जैसी गंभीर स्वास्थ्य स्थितियों के विकसित होने का जोखिम बढ़ सकता है।

नींद की कमी रक्तचाप, इंसुलिन प्रतिरोध और सूजन में वृद्धि से जुड़ी हुई है, जो सभी इन पुरानी बीमारियों में योगदान करते हैं। नेशनल स्लीप क्लीनिक के संस्थापक डाक्टर जे. सी. सूरी का कहना है कि "नींद आराम भर नहीं है यह ऊर्जा भंडार को नियमित एवं नियंत्रित करती है शरीर की भीतरी भरपाई और मरम्मत में मददगार है याददस्त को दुरुस्त रखते हैं आप अपने शरीर को अगर यह सब नहीं करने देते हैं तो धीरे-धीरे और कमजोर होगा ही और नींद के विकार भी कई तरह के हो सकते हैं।"

कमजोर प्रतिरक्षण प्रणाली

बैंगलूरु की डा. पद्मा सुंदरम स्लीप स्पेशलिस्ट कहती है कि "सोना कोई निष्क्रिय किस्म की गतिविधि नहीं है आपका शरीर भले शांत पड़ा हो लेकिन उसके भीतर बहुत कुछ चल रहा होता है हम पूरा आराम के साथ सुबह तरोताजा होकर उठे इसके लिए जरूरी है कि नींद के सभी चरणों से होकर गुजरें।"

एक अच्छी प्रतिरक्षण प्रणाली के लिए पर्याप्त नींद महत्वपूर्ण है। नींद में गड़बड़ी पैदा करने वाली नीली रोशनी के संपर्क में आने से प्रतिरक्षा प्रणाली

कमजोर हो सकती है, जिससे शरीर संक्रमण और बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

यह कमजोर प्रतिरक्षा सर्दी, फ्लू और अन्य संक्रमणों की अधिक घटनाओं को जन्म देती है।

नीली रोशनी के प्रभावों को कम करना

वर्तमान समय में मोबाईल अतिआवश्यक हो जाने के कारण उपयोग तो बंद नहीं किया जा सकता है पर इसके कुप्रभावों को कम किया जा सकता है।

अब कई मोबाईल डिवाइस बिल्ट-इन नीली रोशनी के फिल्टर या 'नाइट मोड' सेटिंग के साथ आते हैं जो शाम के समय नीली रोशनी के उत्सर्जन को कम करते हैं। इन सुविधाओं का उपयोग करके नींद और आंखों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने में मदद मिल सकती है। इसी प्रकार विशेष रूप से डिजाइन किए गए चश्मे जो नीली रोशनी को रोकते हैं या फिल्टर करते हैं, उन्हें डिवाइस का उपयोग करते समय, विशेष रूप से रात में, जोखिम को कम करने के लिए पहना जा सकता है।

स्क्रीन टाइम को सीमित करना

स्क्रीन टाइम को कम करना, खास तौर पर सोने से पहले, नीली रोशनी के संपर्क और उससे जुड़े हानिकारक प्रभावों को कम करने में मदद कर सकता है।

सोने से काफी पहले मोबाईल पर फिल्म, रील इत्यादि देखना बंद करने से अच्छे स्वस्थ नींद के माहौल को बनाए रखने में मदद मिल सकती है। सोने से पहले अच्छी किताबें पढ़ना अच्छी नींद में मदद कर सकती है।

आज जबकि मोबाईल उपकरणों से निकलने वाली नीली रोशनी आधुनिक जीवन का एक अभिन्न अंग हो गई है, आंखों के स्वास्थ्य, नींद के पैटर्न, मानसिक स्वास्थ्य और सम्पूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव महत्वपूर्ण हैं। नीली रोशनी के संपर्क को कम करने के लिए कदम उठाना, खास तौर पर शाम के समय, दीर्घकालिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

(संदर्भ— इंडिया टुडे अगस्त 24 अंक एवं इन्टरनेट पर विभिन्न साइट)

प्रकाश क्या है



रंजन कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकाश क्या है ? इस प्रश्न के कई शत—प्रतिशत सही जवाब मैं दूंगा लेकिन आप इससे पूर्णतः संतुष्ट नहीं होंगे, जैसे कि—

1. प्रकाश ब्रह्माण्ड की सबसे तेज गति से गतिशील चीज है
2. प्रकाश, जिसकी अनुपस्थिति केवल और केवल अँधेरा है
3. प्रकाश जिसके कारण हम किसी वस्तु को अपनी आँखों से देख पाते हैं

मुझे पता है आप मेरे उस अधूरे सत्य जवाब का इंतजार कर रहे हैं कि प्रकाश किरणों के रूप में चलने वाला ऊर्जा का वाहक है। माध्यमिक कक्षाओं तक हमें बताया गया है कि प्रकाश ऊर्जा का एक रूप है जो किरणों के रूप में सीधी रेखा में गमन करता है। इन्हीं सीधी रेखाओं में गमन करने वाली किरणों का उपयोग हम समतल दर्पण, गोलीय दर्पण, प्रिज्म, सूक्ष्मदर्शी, दूरबीन इत्यादि प्रकाशीय यंत्रों में करके किसी वस्तु का प्रतिविम्ब प्राप्त करते हैं। किसी भी वस्तु से निकलने वाली प्रकाश की किरण जब हमारी आँखों तक पहुँचती है तो उस वस्तु का प्रतिविम्ब हमारी आँखों के रेटिना पर बनता है।

लेकिन क्या प्रकाश की किरण केवल सीधी रेखा में गमन करती है? मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ, कल्पना किजिए आप पूर्णतः अँधेरी जगह में एक कमरे में हैं। कमरे के अन्दर एवं बाहर पूर्णतः अँधेरा है। स्पष्ट है कि कमरे के अन्दर आपको अपना हाथ भी नहीं दिख रहा होगा। अब कमरे के बाहर दरवाजे से सात फुट की दूरी पर बाहर दीवार पर लगे एक बल्ब को जला दिया जाता है। क्या अब अपने हाथ को कमरे के अंदर देख पा रहे हैं, अवश्य ही आप देख पाएंगे। जाहिर है प्रकाश ने अपना रास्ता केवल सीधा नहीं रखा बल्कि दरवाजे से होते हुए आपके हाथ एवं आँखों तक पहुँचा। अतः प्रकाश केवल सीधी रेखाओं में गमन करता है यह पूर्णतः सत्य नहीं है। प्रकाश की किरण एक नियत दूरी तक ही सीधी रेखाओं में गमन करती है जिसे

Fresnel's Distance कहा जाता है। इसी दूरी तक प्रकाश के परावर्तन, अपवर्तन, प्रकीर्णन, पूर्ण आन्तरिक परावर्तन इत्यादि क्रियाएँ होती हैं। इसके इतर प्रकाश जब संकीर्ण पथों/कोनों (Narrow path, sharp edges, corners) से होकर गुजरती है तो मुड़ जाती है जिसे प्रकाश का विवर्तन (Diffraction) कहा जाता है। प्रकाश का यह रूप तरंग का रूप है, जिसमें ऊर्जा का प्रवाह व्यवधान के स्थानान्तरण के फलस्वरूप होता है। प्रकाश की तरंगें विद्युत एवं चुम्बकीय क्षेत्रों के दोलन के कारण आगे बढ़ती हैं। दोनों क्षेत्र एक ही आयाम में एक दूसरे के लम्बवत दोलन करते हैं एवं प्रकाश दोनों क्षेत्रों के लम्बवत दिशा में आगे बढ़ता है। प्रकाश की तरंगें कई प्रकार की होती हैं जिनमें अलग-अलग ऊर्जा होती है क्योंकि उनका अलग-अलग तरंगदैर्घ्य (wavelength) होता है। श्वेत प्रकाश जो कि दृश्य है, सात Monochromatic waves का संयोग है (बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल)। बैंगनी रंग का तरंगदैर्घ्य सबसे कम एवं लाल रंग का तरंगदैर्घ्य सर्वाधिक होता है। ऊर्जा के अनुसार इन एकवर्णी तरंगों के किसी खास माध्यम से चलने की गति भी अलग-अलग होती है

आइए अब प्रकाश के तीसरे रूप की चर्चा की जाय। हम सब जानते हैं कि जब इलेक्ट्रॉन का प्रवाह होता है केवल तभी विद्युत् धारा उच्च विभव से निम्न विभव की ओर बहती है। सौर ऊर्जा प्लेटों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती है तो विद्युत् प्रवाह शुरू हो जाता है स्पष्ट है की प्लेटों में इलेक्ट्रॉन का प्रवाह शुरू हो जाता है। इलेक्ट्रॉन, प्लेट के धातु के परमाणु के नाभिक के चारों ओर अपनी ऊर्जा के अनुसार

नियत कक्षाओं में चक्कर लगाते रहते हैं और ये तबतक उन कक्षाओं को नहीं छोड़ते जबतक कि उन्हें किसी प्रकार से अतिरिक्त ऊर्जा नहीं मिल जाय। इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रॉन सरीखे कण सापेक्षतावादी कण हैं जो केवल सापेक्षतावादी कण से ही परस्पर अंतः क्रिया प्रभावित करते हैं। अब सवाल यह उठता है कि सौर प्लेट के धातु के परमाणु में स्थित इलेक्ट्रॉन को अतिरिक्त ऊर्जा प्रकाश से मिलती है, तो प्रकाश में ऐसा कौन सा कण है जो इलेक्ट्रॉन से अंतः क्रिया करता है इस प्रश्न का उत्तर है कि प्रकाश वास्तव में कणों का समूह है। इन कणों को फोटॉन (PHOTONS) कहा जाता है—हिग्स क्षेत्र से न के बराबर अंतः क्रिया करने के कारण यह एक द्रव्यमान रहित कण है— हालांकि इसमें संवेग ($p=h\lambda$) एवं चालित द्रव्यमान मौजूद होता है। प्रत्येक फोटोन की एक नियत ऊर्जा होती है जिसे $E=hc/\lambda$ से प्रकट किया जाता है जहाँ h =Plank's constant c =velocity of light λ =De-broglie wavelength है। करीब 1000 फोटोन में से 01 ही अपनी ऊर्जा देकर इलेक्ट्रॉन को धातु के परमाणु से बाहर निकाल पाता है। Photosensitive धातु के प्लेटों से जो इलेक्ट्रॉन फोटोन के इंटरैक्शन के बाद निकलते हैं उनकी ऊर्जा अलग-अलग होती है जिसे आइन्स्टीन के सूत्र $E_{\text{photon}} = \phi \text{ (Work function) + Stopping potential/Kinetic energy of electron}$ से ज्ञात किया जाता है। गतिज ऊर्जा प्राप्त करके इलेक्ट्रॉन गतिमान हो जाते हैं एवं विद्युत् उर्जा का प्रवाह शुरू हो जाता है। क्वान्टम भौतिकी में धातु प्लेट के इकाई क्षेत्रफल पर समय की सबसे छोटी इकाई कण में फोटोन की संख्या को quantize किया गया है अर्थात् ये फोटोन n के गुणको में होते हैं न की $n/2$, $n/3$ इत्यादि, जहाँ n वास्तविक संख्याएं हैं।

इस प्रकार प्रकाश एक साथ किरण, तरंग, एवं कण तीनों स्वभाव ऊपर वर्णित स्थितियों में प्रदर्शित करता है।

(क्वान्टम भौतिकी से सम्बंधित अन्य कुछ रोचक विषयों पर चर्चा अगले आलेख में।)

फिर एक बार सृजन की आस है...



✍ दिव्या नाथ

रचना कुछ ऐसी रच जाऊं
आशा की ज्योत जला आऊं
कुछ ऐसा ठान के आ जाऊं
कि मस्तक फिर से तन जाए
गौरव का दीप चमक जाए ।

कुछ ऐसी बातें खास हैं।

फिर एक बार सृजन की आस है।।

उपवन के फूलों को देखा,
उगती कलियों को देखा
पिंजरे से पंछी बाहर देखा,
फिर ओस की बुंदें चमकी यूं
दमकी जैसे हाथ की रेखा

जो नरम मुलायम घास है,

फिर एक बार सृजन की आस है।।

हो उजियारा आंखों में
भोलापन उन बातों में
एक दूजे का हाथ बढ़े
सागर से सरिता आन मिले
बगिया में सुरभि फूल खिले

प्रिय, प्यारा तेरा साथ है

फिर एक बार सृजन की आस है।।

द्वारा सुभाष वर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हुई सुबह
 लो लग गई भीड़
 मेले सी फुटपाथ पर
 कोई बेचे फूल
 कोई बेचे फल और सब्जी
 बिछी चटाई फुटपाथ पर
 चढ़ी कढ़ाही
 फूली कचौड़ी, खिली जलेबी
 लो लग गई रेहड़ी भी
 कपड़ों की फुटपाथ पर
 टिकुली, बिन्दी, चूड़ी, महावर
 घड़ी, चश्मा, तकिया, चादर
 जो चाहो ले लो
 मिलते हैं फुटपाथ पर
 है खड़ी दुल्हन—सी
 सजी—धजी बड़ी बड़ी दुकानें
 बहाती आँसू
 देख सौतन फुटपाथ पर
 दिन ढले सजते ठेले
 चाट, पकौड़ी, डोसा, इडली
 तीखी मिर्ची गोलगप्पा खाती
 मिलती अप्सराएँ फुटपाथ पर
 मिलता यहाँ रोजगार
 होता हुस्न का भी दीदार
 होती हर हसरत पूरी फुटपाथ पर

फुटपाथ पर



श्याम दत्त मिश्रा
 सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

होता यहाँ मोल—भाव
 होती खूब खींच—तान
 दिखता दृश्य निराला फुटपाथ पर
 जो ढल जाती शाम
 आ जाती रात
 फिर बेसहारों को
 मिलता सहारा फुटपाथ पर
 पान की पीक
 थूक—खखार या हो
 मूत की लम्बी धार
 है बहती फुटपाथ पर
 बेचो, खरीदो, खाओ, पियो
 करो शौच फुटपाथ पर
 जो मर्जी तुम करलो
 है पूरी आजादी तुमको
 बस चलना है मना फुटपाथ पर
 तुम क्या जानो
 महलों वालों
 बैठे तख्त पर हुक्मरानों
 है आधी दुनिया फुटपाथ पर
 कहता है लोकतंत्र हमारा
 हाल कुछ—कुछ मेरा भी है ऐसा
 मैं भी हूँ फुटपाथ पर।



बचपन के सपने



✍ शिव कुमार सिंह नं. 2
लेखापरीक्षक

जब किसी घर में बच्चे का जन्म होता है तो उस समय उस घर में काफी खुशियाँ मनाई जाती हैं। धीरे-धीरे उस घर में उस बच्चे का लालन-पालन शुरू होता है जहाँ एक ओर उस बच्चे के माता-पिता अपने बच्चे से भविष्य में कई आशाएं एवं अपेक्षाएं संजोने लगते हैं दूसरी ओर समयानुकूल वह बच्चा धीरे-धीरे दुनिया की प्रत्येक वस्तुओं से अवगत होने लगता है और वह स्वयं अपने लिए नए-नए सपने संजोने लगता है। इसमें से कुछ ऐसे सपने होते हैं जो वह तुरंत प्राप्त कर लेना चाहता है। और कुछ ऐसे सपने होते हैं जिसे वह समयानुकूल भविष्य में प्राप्त करना चाहता है। तुरंत प्राप्त होने वाले सपने को हम उसकी इच्छा के रूप में इस प्रकार जान सकते हैं जैसे नए-नए कपड़े पहनना, नई-नई जगहों पर जाना, मिठाइयां एवं स्वादिष्ट पकवान खाना आदि। भविष्य में जो इच्छाएं होती हैं उसे हम मूल रूप से बच्चों के सपनों के रूप में जान सकते हैं जैसे बड़ा होकर अमुक व्यक्ति जैसा बनना, अमुक कार्य करना आदि। इनमें से जो वर्तमान स्थिति होती है वह तो पूरा हो ही जाता है मगर जो बाद की स्थिति होती है वह उस बच्चे के घर-परिवार, समाज एवं उसके रहन-सहन के परिवेश पर ज्यादातर निर्भर करता है।

प्रत्येक माता-पिता अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने बच्चों को वह हर सुख-सुविधाएं प्रदान कराना चाहते हैं जो दुनिया में अन्य बच्चों को मिलती है। साथ ही वह अपने बच्चे के सकारात्मक सोच को भी सफल करने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक इंसान के बचपन में पढ़ाई को ज्यादा महत्व प्रदान किया जाता है, ऐसा माना जाता है कि बच्चे के पढ़ाई पर ही उसका भविष्य निर्धारित होता है। कुछ बच्चे पढ़ने में कमजोर होते हैं तो कुछ पढ़ने में मेधावी होते हैं।

इन्हीं दो के आधार पर बच्चा स्वयं अपने आप में अपने भविष्य संबंधी अनेक सपने देखना शुरू करता है। जिन बच्चों को पढ़ने में मन नहीं लगता है वे बड़े होकर कुछ इस प्रकार का कार्य करना चाहते हैं जैसे क्रिकेटर बनना, नेता बनना या समाज सुधारक या अन्य कार्य जो उसे अच्छा लगे। जो बच्चे मेधावी होते हैं वे ज्यादातर सरकारी सेवक, समाज सेवक एवं अन्य प्रतिष्ठित कार्य को भविष्य में करना पसंद करते हैं। समय परिस्थितियों के हिसाब से उन बच्चों की जिंदगी भी करवटें बदलती रहती है। कभी-कभी तो यह देखने को मिलता है कि जो बच्चे कभी पढ़ाई में कमजोर थे, वे बड़े होकर सफल इंसान बन गए जबकि जो बच्चे मेधावी थे, वे बड़े होकर अपने सपनों को पूरा नहीं कर सके। परिणामस्वरूप देखा जाए तो प्रत्येक इंसान चाहे वह सफल हो अथवा असफल अपने जीवन के कुछ पलों को अपने बचपन की यादों में ले जाता है और यह विचार करने लगता है कि बचपन के वो सपने कितने अच्छे व सुहाने थे और इन्हीं यादों के साथ मुस्कुराते हुए अपने जीवन के पथ पर आगे चलने लगता है।



भूला नहीं पाता हूँ

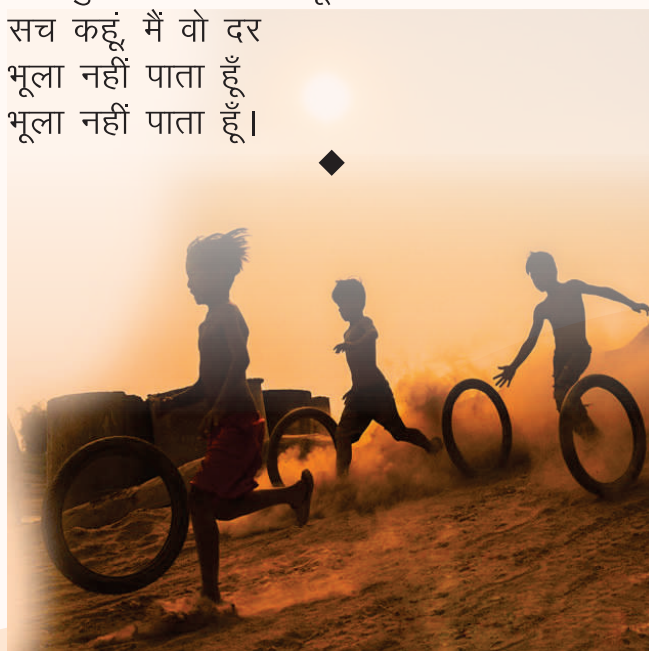


राममौतार प्रसाद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

सच कहूँ भूला नहीं पाता हूँ
उस गली को
जहाँ खेला करता था
बेधड़क यारों के घरों में
घुस जाया करता था
चाचा-चाची जैसे भी थे
कुछ न बोला करते थे
उनके रसोई में रखा कुछ भी
खा लिया करता था
खाने के बाद
तुरंत दोस्त को ले,
बाहर निकल जाते थे।
गली में जमावड़ा होता था
गली तब भी तंग थी
फिर भी उमंग थी
तरंग अपनों की थी
चहुँओर मुस्कान थी
एक गिरता, सभी दौड़ जाते
पूरे मुहल्ला दौड़ पड़ता था
शाम में सभी इकट्ठे हो
कभी कभी अंताक्षरी खेलते थे
गजब अपनापन रहता था
मुहल्लो में शान रहता था
अब माहौल बदला सा है
बहुत लोग छोड़ चुके हैं
अन्यत्र जा बस चुके हैं
अब यही मुहल्ला, किसी को बुचड़
नजर आता है
तन में जबकि यही
मिट्टी उनका भी लगा रहता था
सच कहूँ दिल से

जो अपने जन्मस्थान का न हो सका
किसी का ना हो सका
मुझे आज भी वो मुहल्ला
वो घर याद आता है
याद कर आंसू आ जाते हैं
अब जब कभी जाता हूँ
अपना वो दर, जरूर जाता हूँ
दरवाजे की मिट्टी माथे पर
अमृत समझ, लगाता हूँ
लगाते ही खुशी से मचल जाता हूँ
सच कहूँ
आंसू रोक नहीं पाता हूँ
घर को स्वर्ग समझ
सर झुका, लौट जाता हूँ
सच कहूँ मैं वो दर
भूला नहीं पाता हूँ
भूला नहीं पाता हूँ।



महाकाल भस्म आरती का दिव्य दर्शन



✍ मनोज कुमार नं.-6

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

महाकाल भस्म आरती के दिव्य दर्शन मेरे लिए अलौकिक, अद्भुत और अविस्मरणीय अनुभव था उज्जैन का प्राचीन नाम उज्जयिनी है। उज्जयिनी भारत के मध्य में स्थित है एवं इस नगरी का पौराणिक और धार्मिक महत्व सर्वज्ञात है। माना जाता है कि भगवान् श्रीकृष्ण की यह शिक्षा स्थली रही, तो ज्योतिर्लिंग महाकाल इसकी गरिमा बढ़ाते हैं। आकाश में तारक लिंग है, पाताल में हाटकेश्वर लिंग है और पृथ्वी पर महाकालेश्वर ही मान्य शिवलिंग है।

आकाशे तारके लिंगं पाताले हाटकेश्वरम् ।

भूलोके च महाकालो लिङ्गत्रय नमोस्तु ते ॥

शिवालय में घृणेश्वर ।

पुराणों में महाकाल की महिमा की चर्चा बार-बार हुई है। शिवपुराण के अतिरिक्त स्कन्दपुराण के अवन्ती खण्ड में भगवान् महाकाल का भक्तिभाव से भव्य प्रभामण्डल प्रस्तुत हुआ है। जैन परम्परा में भी महाकाल का स्मरण विभिन्न सन्दर्भों में होता ही रहा है। महाकवि कालिदास ने अपने रघुवंश और मेघदूत काव्य में महाकाल और उनके मन्दिर का आकर्षण भव्य रूप में प्रस्तुत करते हुए उनकी संध्या आरती उल्लेखनीय बताई। उस आरती की गरिमा को रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी रेखांकित किया था।महाकाल मन्दिरे मध्येतखन, धीरमन्द्रे, सन्ध्यारति बाजे। मान्यताओं के अनुसार बाबा महाकाल के दर्शन करने से जीवन-मृत्यु का चक्र खत्म हो जाता है और व्यक्ति को मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भगवान् शिव की भस्म आरती केवल उज्जैन के महाकालेश्वर मन्दिर में होती है। यह आरती अलग

ढंग से की जाती है। इस आरती को प्रातः सुबह के वक्त 4 बजे किया जाता है। माना जाता है की यह आरती चिता की ताजी राख से होती थी। आरती के लिए श्मशान से भस्म लाने की परंपरा थी लेकिन पिछले कुछ सालों से अब कपिला गाय के गोबर से बने कंडे, शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलतास और बेर की लकड़ियों को जलाकर तैयार किए गए भस्म का इस्तेमाल किया जाने लगा है। मान्यता है कि ज्योतिर्लिंग पर चढ़े भस्म को प्रसाद रूप में ग्रहण करने से रोग दोष से भी मुक्ति मिलती है। आरती के दौरान भगवान् के शिवलिंग को पूरी तरह से भस्म से नहला दिया जाता है। बाद में शिवलिंग पर भगवान् शिव का आकृति बनाया जाता है।

मान्यताओं के अनुसार शिवपुराण में बताया गया है कि जब सती ने स्वयं को अग्नि में समर्पित



कर दिया था, तो उनकी मृत्यु का संदेश मिलते ही भगवान शिव क्रोधित हो गए थे और अपना मानसिक संतुलन खो बैठे थे। इसके बाद वह माता सती के मृत शरीर को लेकर इधर-उधर घूमने लगे। जब भगवान शिव को श्रीहरि ने देखा तो उन्हें संसार की चिंता सताने लगी। हल निकालने के लिए उन्होंने माता सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से कई हिस्सों में बांट दिया था। ये हिस्से देश के कई स्थानों पर गिरे और पिंड बन गए। मगर शिव जी के हाथों में केवल माता के शव की भस्म रह गई। भगवान शिव को लगा कि कहीं वह सती को हमेशा के लिए न खो दें इसलिए उन्होंने उनकी शव की राख को अपने शरीर पर लगा लिया।

किंवदंतियों के अनुसार पौराणिक काल में दूषण नाम के राक्षस ने उज्जैन नगरी में तबाही मचा दी थी। तब लोगों ने भगवान शिव से इस प्रकोप को दूर करने की विनती की। भगवान शिव ने दूषण का वध किया और नगरवासियों के आग्रह पर यहीं महाकाल के रूप में बस गए। मान्यता यह भी है कि बाबा भोलेनाथ ने दूषण के भस्म से अपना श्रृंगार किया था। इसलिए आज भी महादेव का भस्म से श्रृंगार किया जाता है। बता दें कि यह पहला ऐसा मंदिर है जहां भगवान शिव की दिन में 6 बार आरती की जाती है। लेकिन दिन की शुरुआत भस्म आरती से ही होती है।

भस्म आरती के दर्शन के लिए श्रद्धालु को पंजीकरण कराना होता है, पंजीकरण ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार से किया जा सकता है। ऑनलाइन हेतु महाकाल मंदिर के आधिकारिक साइट पर जा कर महत्वपूर्ण सूचनाएं भरनी होती है, आपको अपना परिचय पत्र एवं फोटो भी अपलोड करना होता है। वर्तमान में आप अपना पंजीकरण दर्शन के दिन से 15 दिन पहले करा सकते हैं। सामान्यतः 715 स्लॉट प्रतिदिन उपलब्ध कराया

जाता है और समय सुबह 8 बजे से 9 बजे के दौरान ही साइट उपलब्ध होता है। इसकी जानकारी भी मुझे महाकालेश्वर मंदिर के आधिकारिक नंबर पर बात करने पर ही उपलब्ध हो पायी क्योंकि जब भी मैं दिन के समय साइट पर टाइम स्लॉट बुक करने हेतु रजिस्ट्रेशन करने की कोशिश करता साइट अनुपलब्ध दिखाता और मेरी जानकारी में कोई व्यक्ति नहीं था जो रजिस्ट्रेशन करा कर भस्म आरती का लाइव दर्शन किया हो। ऐसे बहुत लोग मिले जो महाकालेश्वर मंदिर का दर्शन एवं भ्रमण तो किए थे पर रजिस्ट्रेशन करने वाले कोई नहीं मिले। तभी मैंने सोचा अगर महाकाल के आशीर्वाद से महाकाल का भस्म आरती मैं देख पाया तो अपने कार्यालय एवं अन्य मित्रों के लिए जरूर जानकारी उपलब्ध कराने की कोशिश करूंगा और 'प्रहरी' पत्रिका से अच्छा माध्यम क्या हो सकता है। इसलिए मैंने इस आलेख में सम्यक जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। तय किए गए दिन के ठीक 15 दिन पहले मैंने सुबह 6:00 बजे ही अपने और अपने परिवार के सभी सदस्यों का आईडी कार्ड और तस्वीर को महाकालेश्वर के भस्म आरती के पोर्टल पर संबंधित सूचनाओं के साथ अपलोड कर दिया था और उसके बाद सुबह में टहलने के लिए निकल गया। समय काटे नहीं कट रहा था। मन में उत्साह था और थोड़ा डर भी था कि क्या पता रजिस्ट्रेशन हो जाएगा या नहीं? 7:45 में लैपटॉप खोलकर पंजीकरण करने का प्रयास किया परंतु 8:00 बजे से पहले साइट ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिया जैसे ही 8:00 बजे साइट खुला मैंने पेमेंट गेटवे पर क्लिक किया, प्रथम प्रयास में मैंने क्रेडिट कार्ड से भुगतान करने का प्रयास किया परंतु वह प्रयास ओटीपी डालने पर विफल हो गया। मैं दुबारा भीम ऐप से भी भुगतान करने का प्रयास किया, ओटीपी डालने के बावजूद भी पेमेंट रिफ्यूज हो गया अब मेरी घबराहट बढ़ने लगी थी जिस काम के लिए मैं इतने दिनों से सोच रहा था वह काम कहीं

विफल न हो जाए इसलिए घबराहट में मैंने पेटिएम से पेमेंट करने का प्रयास किया और महाकाल के आशीर्वाद से भुगतान संपन्न हो गया। इस प्रकार मैंने राहत की सांस ली। संयोगवश भस्म आरती दर्शन दिवस 17.11.2023 था और उस दिन मेरे बेटे मयंक राज का जन्मदिन था, यह मेरे लिए एक और खुशी की बात थी। पंजीकरण के तुरंत बाद मैंने इसकी जानकारी अपनी अर्धांगिनी को दी।

हमलोग महाकाल का नाम लेकर अपने धार्मिक यात्रा की शुरुआत की। सफर का आनंद उठाते हुए हम लोग करीब 1280 किलोमीटर की यात्रा करने के पश्चात महाकाल की नगरी उज्जैन की धरती पर पहुंचे और महाकालेश्वर भक्त निवास जो की महाकाल मंदिर के कैंपस से ही जुड़ा है और जिसकी बुकिंग हमने एक महीना पहले ही कर ली थी, वहाँ पहुंचे। महाकाल भक्त निवास माधव सेवा न्यास समिति द्वारा संचालित है और महाकाल जाने वाले लोगो की पहली पसंद यही ठहरने की होती है। ऐसा मैंने कई लोगों एवं यूट्यूब के कई विडियो में सुना था। यहाँ यह जानकारी महत्वपूर्ण है की भक्त निवास की बुकिंग ऑनलाइन नहीं होती है। इसलिए मैंने वहाँ का फोन नंबर पता किया और एक महीना पहले ही फोन पर बात कर कमरा बुक करने हेतु प्रार्थना की। उसने कुछ जानकारी प्राप्त कर हमें एक बैंक अकाउंट नंबर दिया और बोला आप इस पर ₹2000/- जमा कर स्क्रीनशॉट लेकर हमें इसी व्हाट्सएप पर भेजें। हमने वैसा ही किया। आते वक्त अपने साथ पहचान पत्र अवश्य लेकर आए। मैं पूछते हुए महाकाल भक्त निवास पहुंचा और जैसा सुना था उससे कुछ अच्छा ही पाया। मैं वहाँ जाकर स्वागत कक्ष में अपने बुकिंग की जानकारी दी, काउंटर पर बैठे वालंटियर ने बड़े ही आदर से सारी बातें सुनी और अपने रजिस्टर में मेरा दर्ज नाम देखकर उन्होंने एक कमरा दे दिया और वह कमरा डबल बेड के दो बेड के साथ इतना बड़ा था की मन खुश हो गया। उसे कमरे की खिड़की से महाकालेश्वर मंदिर का

प्रांगण और अद्भुत कॉरिडोर इतना स्पष्ट दिख रहा था कि एक आलौकिक आनंद की अनुभूति होने लगी। हमें उसी रात को भस्म आरती देखनी थी इसलिए हम लोगों ने थोड़ा आराम करने की सोची और थोड़ा आराम करने के पश्चात जैसे ही संध्या वेला ने अपना पांव पसारना शुरू किया महाकाल मंदिर के कॉरिडोर में लगी प्रकाश व्यवस्था में सम्पूर्ण कॉरिडोर अभूतपूर्व लगने लगा, प्रकाश की विभिन्न व्यवस्थाओं ने सारे कॉरिडोर को इतना खूबसूरत बना दिया कि मन बार-बार निहारते रहने का कर रहा था। अब बारी थी भस्म आरती तैयारी की। हम लोगों ने तैयार होकर पारंपरिक वस्त्र धोती-कुर्ता, साड़ी, पजामा कुर्ता धारण कर रात में 1:00 बजे भस्म आरती हेतु निर्धारित स्थान पर पहुंचे। हम लोगों ने सोचा कि हम लोग बहुत पहले आ गए हैं परंतु वहाँ जाने पर पता चला की 60% आदमी तो पहले ही आ चुके थे, वहाँ प्रवेश हेतु तकरीबन 5 जगह पर पंजीयन पास की हार्ड कॉपी और आईडी प्रूफ दिखाना पड़ा तब जाकर कहीं अंतिम जांच स्थान पर पहुंच पाया वहाँ निर्देश दिया गया कि आप अपना अपना मोबाइल जमा कर दें। मोबाइल जमा करने के पश्चात हम लोग पुरी श्रद्धा के साथ भस्म आरती हेतु निर्धारित स्थान मानसरोवर गेट के पास पहुंचे वहाँ जाने पर देखा की श्रद्धालुओं की एक बड़ी संख्या पहले से ही मौजूद है और फर्श पर बैठे हैं। छोटे बच्चे हो, गोद के बच्चे हो, बुजुर्ग हो, युवा हो, महिला हो या पुरुष हो सभी बड़े ही अनुशासित तरीके से अपने स्थान पर बैठे थे। अब रात के 1.30 बज चुके थे और 4:00 बजे सुबह से आरती प्रारंभ होनी थी। सब लोगों ने अपने बैठे हुए स्थान पर थोड़ा झपकी मार कर अपने आप को तरोताजा कर लिए। सुबह 3:30 बजे वहाँ के स्वयं सेवक ने भस्म आरती हेतु नंदी हॉल में जाने का आदेश दिए। हम सब लोग आगे बढ़ना शुरू कर दिए कई बेरिकेड को पार करते हुए हम लोग नंदीहाल पहुंचे। जो पहले आ चुके थे वह आगे बैठे और जो बाद में आए वह पीछे थे। हम लोग को उस अलौकिक पल के एक-एक क्षण का गवाह बनना

था इसलिए हम लोगों ने खड़े होकर साक्षात महाकाल का महाकालेश्वर के गर्भ गृह में दर्शन किया और अपने आप को सौभाग्यशाली माना। उसके बाद शुरू हुआ वह अलौकिक आरती जिसमें मंत्र उच्चारण के साथ ही महाकाल के उद्घोष के साथ आरती शुरू हो गई। कई प्रक्रियाओं के बाद पूरे गर्भ गृह को भस्म से भर दिया गया। भस्म रूपी महाकाल का दर्शन का वह क्षण अद्भुत था। उसका शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। सभी लोगों के मन मस्तिष्क और जुबान पर केवल एक महाकाल का नाम ही गूंज रहा था।

वैसे तो भस्म आरती के दौरान मोबाइल ले जाना वर्जित था परंतु अधिकांश लोगों ने छुपा कर मोबाइल अंदर तक ले गए और भस्म आरती के दौरान जो अद्भुत नजारा देखने को मिला उसे मोबाइल में कैचर कर रहे थे चारों तरफ मोबाइल का पलैशलाइट जल रहा था गर्भ गृह में भगवान महाकाल की आरती पूरे विधि विधान के साथ भस्म से की जा रही थी। करीब 6:00 बजे भस्म आरती संपन्न हुई और सभी लोग भस्म प्रसाद को लेने के लिए धीरे-धीरे पुजारी के पास जाने लगे। हम लोग भी वहां तक पहुंचे और पुजारी द्वारा चंदन लगवा कर भस्म रूपी प्रसाद, पुष्प आदि लेकर भगवान को कोटि-कोटि प्रणाम करते हुए बाहर निकले। तत्पश्चात हम लोगों ने नजदीक के कुछ दर्शनीय स्थल जैसे संदीपनी मुनि जहाँ कृष्ण और सुदामा को बाल्यकाल में शिक्षा मिली थी, का आश्रम, राजा विक्रमादित्य का आसन आदि का दर्शन किया। मेरी अर्धांगिनी ने कई चरणों में मन भर स्थानीय बाजार भ्रमण का लुत्फ उठाया। इस प्रकार उज्जैन की धरती को नमन करते हुए हम लोग अगले पड़ाव ओंकारेश्वर की ओर प्रस्थान किये।

संदर्भ

(यह इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी एवं मेरे व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।)

प्रार्थना



✍ गोपाल कुमार
लेखापरीक्षक

तेरे ख्यालों की रोशनी में
हर एक लम्हा, हर एक पल में

तुम्ही को पाया, तुम्ही को पूजा
हर एक नगर, हर एक वन में

तुम्ही हो माया, तुम्ही हो दृष्टि
कभी तो देखो, ये अपनी सृष्टि

कहाँ है उत्तम, वो पुरुषोत्तम
कहाँ है धर्मो का वो सुदर्शन

दिखे नहीं कुछ, सब है अंधेरा
घनघोर कलयुग, है नहीं सबेरा

प्रभु उठो अब, पुकारे धरती
कली संघारो, बन आओ कल्कि

आ जाओ कल्कि
पुकारे ये धरती ।

मिथिला पेंटिंग



मनीषा कुमारी

परिचय:— मिथिला पेंटिंग जिसे मधुबनी पेंटिंग भी कहा जाता है मुख्य रूप से बिहार के मिथिला क्षेत्र से संबंधित है। यह कला स्थानीय ग्रामीण समुदायों द्वारा प्राचीन समय से प्रचलित है और यह सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन को दर्शाती है।

मिथिला पेंटिंग की तकनीक:— मिथिला पेंटिंग की विशिष्टता इसकी तकनीक में निहित है। इसे पारंपरिक रूप से कागज कपड़े या दीवारों पर बनाया जाता है। इस कला को बनाने के लिए विभिन्न चरणों का पालन किया जाता है।

सतह की तैयारी :— परंपरागत रूप से पेंटिंग को दिवारों पर या कागज और कपड़े की सतह पर बनाया जाता है। कागज या कपड़े को पहले चूने या मिट्टी के घोल से ढक कर तैयार किया जाता है ताकि सतह चिकनी हो जाए।

रेखा चित्रण:— मुख्य रूप से इस कला में जिन विषयों पर पेंटिंग बनाना होता उससे संबंधित चित्र जैसे देवी-देवता, स्त्री-पुरुष, जीव-जन्तु आदि के चित्र की मुख्य रेखाओं को मोटे और काले रंग के प्राकृतिक रंगों से उकेरा जाता है। ये रेखाएं पेंटिंग की संरचना को स्पष्ट करती हैं।

द्वि आयामी:— मिथिला पेंटिंग के सभी चित्र द्वि-आयामी ही होते हैं यानी इससे बनाये गये चित्र का सिर्फ लंबाई और चौड़ाई ही आप देख सकते हैं इसकी मोटाई आपको नहीं दिखेगी और यही इसकी विशिष्टता है।

कचनी चित्र :—उकेरने के उपरान्त उसे विभिन्न ज्यामितीय रेखाओं की मदद से उसमें कचनी किया

जाता है। जिससे चित्र का अधिकांश भाग भर दिया जाता है।

भरनी :— कचनी के बाद विभिन्न घटक रंगों की मदद से इसे भरा जाता है। पेंटिंग में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है जैसे कि हरी पत्तियों से हरे रंग, लाल फूलों से लाल रंग और पीले रंग के लिए हल्दी का उपयोग कर रंगों को ध्यानपूर्वक और सटीकता के साथ भरा जाता है। अब आर्टिफिशियल रंग का भी प्रयोग होने लगा है।

चित्रण में एक आँख का महत्व:— मिथिला पेंटिंग में एक आँख का चित्रण प्रतीकात्मक होता है। इसे



आमतौर पर देवी देवताओं या महत्वपूर्ण व्यक्तियों की विशेषता के रूप में चित्रित किया जाता है। यह एक ही आँख का चित्रण जो अधिक ध्यान आकर्षित करने और दर्शकों को विशेष रूप से प्रभावित करने का उद्देश्य रखता है।

बॉर्डर का महत्व :- पेंटिंग में बॉर्डर का उपयोग एक सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण से किया जाता है बॉर्डर अक्सर चित्र को संपूर्ण और विशिष्ट रूप में प्रदर्शित करने का कार्य करता है।

फूल पत्तियों से भरना:- मिथिला पेंटिंग में खाली जगह को फूलों और पत्तियों से भरना, कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल चित्र की सुंदरता को बढ़ाता है बल्कि इसकी परंपरागतता और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाता है। फूल और पत्तियाँ चित्र के अन्य भागों के साथ मेल खाते हुए एक संपूर्ण और समृद्ध दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

इतिहास और पहचान:- मिथिला पेंटिंग की उत्पत्ति का इतिहास प्राचीन है। माना जाता है कि रामायण काल में भी भगवान राम के स्वागत में मिथिला को इन कलाओं से सजाया गया था। इस कला का वर्तमान रूप मध्यकालीन भारत के मिथिला क्षेत्र में शुरू हुआ था और इसे स्थानीय महिलाओं द्वारा विकसित किया गया। इसका महत्व धार्मिक लोककथाओं और पारंपरिक कथाओं में दर्शाने से है। मिथिला पेंटिंग भारतीय लोक कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो अपने विशिष्ट रंग, प्रतीकात्मक चित्रण और सांस्कृतिक संदर्भ के कारण इसके निर्माण की पारंपरिक विधियों और रंगों की विशेषता इसे एक अनूठी कला बनाती है। समय के साथ मिथिला पेंटिंग ने विश्वभर में अपनी पहचान बनाई है और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध किया है।

द्वारा:- श्री राम सेवक पासवान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,

स्वयं



श्रीमती हीरा कुमारी

स्वयं में जो वशीभूत रहे,
औरों की हालत क्या जाने ।
स्वार्थ लिप्सा पूरित दिल,
औरों से दिल मिलाना क्या जाने ।
नूतन प्रसून मसलने वाले,
उपवन बसाना क्या जाने ।
वैभव के जो हैं दीवाने,
वे प्रेम जताना क्या जाने ।
अपनों में जो सिमट रहे,
वो समाज बसाना क्या जाने ।
माया मोह में जो जकड़ गए,
वो हाथ बढ़ाना क्या जाने ।
सागर को जिसने देखा नहीं,
वह लहरों को गिनना क्या जाने ।
पत्थर दिल जिसका हो,
वह आँसू बहाना क्या जाने ।

द्वारा- तरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

यात्रा देवभूमि की-भागीरथी



✍ के० एम० जयपुरियार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हमारे चालक ने उत्तरकाशी के लिए मुख्य मार्ग को छोड़कर एक निर्जन पहाड़ी छोटा मार्ग चुन लिया जिससे उत्तरकाशी की दूरी मात्र 140 कि०मी० रह गई परन्तु अत्यन्त संकरा, ऊँचा और घनघोर बारिश के कारण यह मार्ग काफी डरावना लग रहा था। खैर कुछ देर बाद इन्द्रदेव ने हमारी प्रार्थना सुन ली और बारिश तो थम गयी पर सूर्यास्त के बाद अंधेरे ने इस निर्जन मार्ग, जिसमें 10-10 कि०मी० तक कोई भी नहीं दिखता था, ने हमें और डराना शुरू किया।

किसी तरह हम लम्बगाँव तक पहुँच गये जहाँ से हमने मुख्य सड़क मार्ग को पकड़ लिया किन्तु तब तक रात के नौ बज चुके थे और हम घूँप अंधेरे में हिमालय के जंगली रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। तभी रास्ते में एक हिमालयन चीता से हमारी मुलाकात हुई जिसकी आँखे गाड़ी के हेड लाइट में जबरदस्त चमक रही थी। शायद वह हमारे वहाँ पर गाड़ी से नीचे उतरने की प्रतीक्षा कर रहा था परन्तु हमने उसकी इच्छा को नकारते हुए आगे बढ़ते रहने में ही अपनी भलाई समझी।

थोड़ी ही देर में हम रौशनी में जगमगाते उत्तरकाशी शहर में प्रवेश कर गये। हिमालय की लगभग 4000 फीट की उंचाई पर बसा यह शहर 1991 में एक भयानक भूकम्प का गवाह रहा था जिसमें हजारों लोगों की मृत्यु हो गयी थी। उत्तराखंड का यह वही शहर है जहाँ गंगा और यमुना दोनों नदियों का उद्गम स्थल अर्थात् गंगोत्री और यमुनोत्री है इसलिये गंगोत्री और यमुनोत्री जाने वाले श्रद्धालु यहीं रुककर आगे की यात्रा करते हैं।

लगभग रात के 10 बजे उत्तरकाशी नगर से 6 कि०मी० बाहर भागीरथी के तट पर आई.टी.बी.पी. के बने अत्यंत खूबसूरत अतिथि गृह में हम पहुँच गये जहाँ पहले से वहाँ के सहायक कमान्डेन्ट श्री अक्षय जी और उनके मेस कमान्डर हमारी प्रतीक्षा में थे। उन्होंने जल्दी से हमारे कमरे दिखाये और रात्रि भोजन के लिए डाईनिंग हॉल में आने को कहा।

सुबह में भागीरथी की कल-कल धारा की आवाज ने हमें जगाया, सुबह नाश्ते के बाद लगभग 100 कि०मी० दूर गंगोत्री धाम के लिए निकल पड़े।

लगभग तीन बजे हम गंगोत्री धाम पहुँच गये जो समुद्र तल से लगभग 10300 फीट उंचा था और यहाँ हमने मां गंगा के मंदिर में पूजा आराधना की और गंगोत्री तट के दर्शन किए। यहीं से लगभग 21 कि०मी० दूर पर्वत की उंचाई पर गोमुख ग्लेशियर से गंगा निकलती है और गंगोत्री तक आकर यह पूरी तरह नदी का स्वरूप का धारण करती है। यहीं पास में महान तपस्वी भागीरथ की तपोभूमि है जिसके भी हमने दर्शन किये। गंगोत्री से जल लेकर और मां गंगा के प्रसाद को ग्रहण कर हम वापस लौटने की तैयारी में आगे बढ़े। नीचे आते समय भागीरथी का वेग और उसके हिमालय की विशालकाय चट्टानों से टकराव आप स्पष्ट देख सकते हैं।

कथाओं के अनुसार जब गंगा स्वर्ग से धरती पर उतर रही थी तो उसे अपने वेग पर बड़ा अभिमान था और उसे लग रहा था कि उसके वेग को धरती सहन नहीं कर पायेगी तभी भगवान शिव ने उन्हें अपनी जटाओं में बाँध लिया जिससे वे अकुला कर शिव से प्रार्थना करने लगी तब भोलेनाथ ने अपनी एक जटा को उखाड़ कर उन्हें एक छोटा सा रास्ता दिया जिससे वे निकल सके और धरती को कोई हानि को भी नहीं पहुँच पाये।

पूरी यात्रा के दौरान हमने भारत के विभिन्न राज्यों के श्रद्धालुओं से भरी बसों को देखा और यह भी देखा कि वे किस प्रकार तीर्थाटन के लिए पूरी तैयारी के साथ निकलती हैं। वे जगह-जगह बसों से उतरकर उचित स्थान देखकर अपने पूरे समूह के लिए भोजन बनाते और खाते चलते चले जाते हैं। खाना बनाने के लिए पहाड़ों का निर्मल पानी हर जगह प्राकृतिक रूप से उपलब्ध था जिसका हमने भी खूब लाभ लिया। इन जलों में वास्तव में औषधीय गुण थे जिसके कारण यह बाजार के बोतल बंद मिनरल वाटर से कई गुणा अधिक मीठा था।

अपनी योजना के अनुसार ऋषिकेश में हमें लक्ष्मण झूला देखना था और हरिद्वार में माता मनसा देवी के दर्शन के उपरांत हर की पौड़ी में गंगा स्नान और गंगा आरती का आनंद भी उठाना था। परन्तु गुजरात के मोरवी पूल हादसे के बाद ऋषिकेश के लक्ष्मण झूला जो अपनी अवधि पूरा कर चुका है को बंद कर दिया गया था। अतः हमने सीधे हरिद्वार का रुख किया। हमने मां मनसा देवी को दूर से ही प्रणाम कर गंगा स्नान की ओर बढ़ गये। पतित पावनी गंगा के निर्मल जल में स्नान के बाद हमें काफी आराम लगा और हम वहीं घंटों बैठे रहे तब तक हम दोनों मित्रों की पत्नियों ने वहाँ के बाजार का आनंद लिया और हमारे सामानों के बोझ को

कुछ और बढ़ाया। शनिवार की छुट्टी के दिन और चार धाम यात्रा के समय होने के कारण आज यहाँ गंगा आरती के लिए लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ थी जिस कारण हमारे लिए आरती स्थल पर पहुँचना लगभग असंभव था। परन्तु एक बार फिर आई.टी. बी.पी. के अधिकारी श्री हुडा जी के सहयोग से हमने गंगा आरती के अद्भुत दर्शन का लाभ ले ही लिया। आरती के बाद हरिद्वार के भीड़ भरे लगभग दो कि. मी. लंबे बाजार से होते हुए हुडा जी ने हमें स्टेशन तक छोड़ दिया जहाँ से हमें अपनी-अपनी ट्रेन पकड़नी थी क्योंकि मेरा टिकट दिल्ली के रास्ते पटना तक का था तो वहीं हमारे सहयात्री अजीत जी का सीधे पटना के लिए।

इस पूरी यात्रा में विशिष्ट रूप से ध्यान रखने वाली बातें:

यात्रा पूर्व सभी यात्रियों का यात्रा का पंजियन आवश्यक है। यदि आप कोई दवा लेते हों तो वो जरूर रख ले और साथ ही बुखार, शरीर और सर में दर्द की दवा रख लें। अगर आपको उंचाई वाले स्थान पर दिक्कत आती हो तो इनहेलर रखें या कुछ लोग आक्सीजन के लिए अपने साथ कपूर भी साथ रखते हैं। यात्रा के लिए बुक किये गये गाड़ी पर बैठने के पूर्व चालक का ग्रीन परमिट की जांच अवश्य कर लें। पर्याप्त मात्रा में गरम कपड़े क्योंकि इन ऊँचे स्थानों पर तापमान काफी कम होता है और इस मई-जून की झुलसती गर्मी में भी रात्रि में तापमान माइनस में पहुँच जाता है। चूँकि इन स्थानों पर मौसम बिल्कुल अप्रत्याशित होता है और न जाने कब वर्षा या बर्फवारी हो जाये अतः बरसाती जरूर अपने साथ रख लें। इसके अलावे सबसे प्रमुख है कि आप ऐसी यात्राओं के दौरान अपनी हिम्मत बनाए रखें और अपने सहयात्रियों को भी हिम्मत दें। इन स्थानों पर अपनी उर्जा को संरक्षित रखना अतिआवश्यक है अतः कम बोलने का प्रयास करें और अनावश्यक शारीरिक श्रम न करें। ♦

सार्वजनिक वित्त



✍ गौरव कुमार महतो

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वह विज्ञान जो राज्य के समुचित कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक भौतिक साधनों को प्राप्त करने और लागू करने में राजनेता की गतिविधि से संबंधित है, सार्वजनिक वित्त है। — कार्ल प्लेहन

सार्वजनिक वित्त अर्थव्यवस्था की वह शाखा है जो सरकारी राजस्व और सार्वजनिक प्राधिकरणों के सरकारी व्यय का आकलन करती है और वांछनीय प्रभावों को प्राप्त करने और अवांछनीय प्रभावों से बचने के लिए एक या दूसरे का समायोजन करती है। यह दो शब्दों सार्वजनिक और वित्त से बना है। सार्वजनिक शब्द का अर्थ है सरकार और वित्त का अर्थ है धन के प्रबंधन का विज्ञान। इसलिए शाब्दिक रूप से सार्वजनिक वित्त का अर्थ है सार्वजनिक मामलों के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आर्थिक संसाधनों के आवंटन का अध्ययन। कार्यों के सुचारु निष्पादन के लिए, कल्याणकारी राज्य के कार्य जटिल होते हैं और उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों के अनुसार राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर किया जाता है। सार्वजनिक वित्त शासन के सभी स्तरों पर कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निर्वहन करने और सभी जटिल कार्यों के लिए वित्त को ध्यान में रखता है। इस प्रकार, सार्वजनिक वित्त का अर्थ है सार्वजनिक निकायों का वित्त — राष्ट्रीय, राज्य या स्थानीय — उनके कार्यों के निष्पादन के लिए। इस प्रकार सार्वजनिक वित्त का अर्थ है सार्वजनिक प्राधिकरणों के वित्तीय संचालन का प्रशासन। इसलिए, सार्वजनिक वित्त सार्वजनिक संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधनों और प्रौद्योगिकी के आवंटन और प्रबंधन का अध्ययन है। सार्वजनिक वित्त इस सवाल से निपटता है कि सरकार अपने खर्चों को पूरा करने के लिए अपने

संसाधनों को कैसे जुटाती है। सार्वजनिक वित्त का दायरा जैसा कि डाल्टन कहते हैं, 'सार्वजनिक वित्त' 'सार्वजनिक प्राधिकरणों' की आय और व्यय और एक के दूसरे के साथ समायोजन से संबंधित है। तदनुसार, कराधान, सरकारी व्यय, सार्वजनिक उधार और घाटे के वित्तपोषण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव सार्वजनिक वित्त का विषय है। सार्वजनिक वित्त अर्थव्यवस्था पर बजट के प्रभावों का अध्ययन है, विशेष रूप से प्रमुख आर्थिक उद्देश्यों — विकास, स्थिरता, इक्विटी और दक्षता की उपलब्धि पर प्रभाव। इसके अलावा, यह राजकोषीय नीतियों से भी संबंधित है, जिन्हें मूल्य स्थिरता, आर्थिक विकास, आय के समान वितरण जैसे कुछ उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपनाया जाना चाहिए। 20वीं सदी के तीस के दशक के दौरान पश्चिमी औद्योगिक देशों में आई महामंदी से पहले, सार्वजनिक वित्त की भूमिका नागरिक प्रशासन और रक्षा के सरकारी कार्यों को पूरा करने के लिए विदेशी देशों से पर्याप्त संसाधन जुटाने के रूप में मानी जाती थी। इस अवधि के दौरान, अर्थशास्त्रियों ने व्यय को न्यूनतम रखना समझदारी माना ताकि लोगों पर कर लगाने से यथासंभव बचा जा सके। इसके अलावा, यह सोचा गया था कि सरकारी बजट संतुलित होना चाहिए। सार्वजनिक उधार मुख्यतः उत्पादन उद्देश्यों के लिए अनुशंसित था। युद्ध के दौरान, सार्वजनिक उधार वैध माना जाता था, लेकिन यह माना जाता था कि सरकार को जल्द से जल्द ऋण चुकाना चाहिए या

कम करना चाहिए। लेकिन तीस के दशक की महामंदी और उसके कीनेसियन स्पष्टीकरण के प्रभाव में, सार्वजनिक वित्त की सोच और भूमिका में भारी बदलाव आया। सार्वजनिक वित्त का शास्त्रीय दृष्टिकोण तत्कालीन मौजूदा स्थिति की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सका। कुल प्रभावी मांग को बढ़ाने और इस तरह देश में आय और रोजगार के स्तर को बढ़ाने के लिए, सार्वजनिक वित्त को एक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए कहा गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और उसके बाद, पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं को गंभीर मुद्रास्फीति के दबावों का सामना करना पड़ा, जिसका कारण अत्यधिक समग्र मांग थी। इसलिए, ऐसी मुद्रास्फीति की स्थितियों में, सार्वजनिक वित्त से कुल मांग को कम करके कीमतों को नियंत्रित करने की उम्मीद की गई थी। इस प्रकार बजट जो पहले सरकार की सीमित गतिविधियों के लिए संसाधन जुटाने के लिए था, ने आर्थिक विनियमन के साधन के रूप में कार्य करने के लिए एक कार्यात्मक भूमिका निभाई। यह महसूस किया गया कि सरकार की कर और व्यय नीतियाँ आर्थिक उतार-चढ़ाव को कम करने में एक लंबा रास्ता तय कर सकती हैं। संतुलित बजट को अब पवित्र नहीं माना जाता है और सरकारें अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य को बहाल करने के लिए मजबूत वित्त के सिद्धांतों का उल्लंघन किए बिना अपने संसाधनों से परे खर्च कर सकती हैं।

मंदी के समय सार्वजनिक उधारी और उसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक ऋण में वृद्धि समग्र मांग को बढ़ाती है और इस प्रकार आय और रोजगार के स्तर को बढ़ाने में मदद करती है। इसलिए, ऐसे समय में घाटे का बजट और सार्वजनिक ऋण में वृद्धि स्वागत योग्य बात है। कीन्स ने आगे यह बताया कि सरकार द्वारा घाटे का वित्तपोषण गुणक की प्रक्रिया के माध्यम से घाटे के वित्तपोषण की मूल राशि से कहीं अधिक आय और रोजगार पैदा करके एक धीमी अर्थव्यवस्था को सक्रिय कर सकता है। इस प्रकार, कीनेसियन क्रांति के बाद सार्वजनिक

वित्त ने पूर्ण रोजगार स्तर पर आर्थिक स्थिरता बनाए रखने की एक कार्यात्मक भूमिका निभाई। इसलिए, सार्वजनिक वित्त का वर्तमान दृष्टिकोण सरकार के लिए केवल संसाधन जुटाने का नहीं है, बल्कि मांग के प्रबंधन के माध्यम से स्थिरता बनाए रखने के लिए एक साधन के रूप में कार्य करने का है। विकासशील देशों में, सार्वजनिक वित्त को एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। जहाँ विकसित औद्योगिक देशों में अल्पावधि में मूल समस्या पूर्ण रोजगार स्तर पर स्थिरता सुनिश्चित करना है तथा दीर्घावधि में आर्थिक वृद्धि की स्थिर दर को सुनिश्चित करना है, अर्थात् उतार-चढ़ाव रहित वृद्धि, वहीं विकासशील देशों के सामने अधिक कठिन समस्या यह है कि वे उच्च आर्थिक वृद्धि दर कैसे उत्पन्न करें ताकि गरीबी और बेरोजगारी की समस्याओं से निपटा जा सके। इसलिए, सार्वजनिक वित्त को मूल्य स्थिरता बनाए रखने के अलावा विकासशील देशों में आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभानी होगी। इसके अलावा, विकासशील देशों के लिए केवल आर्थिक वृद्धि ही पर्याप्त नहीं है। यह बढ़ते उत्पादन और अतिरिक्त आय के वितरण की संरचना ऐसी होनी चाहिए जो विकासशील देशों में गरीबी और बेरोजगारी को दूर करना सुनिश्चित करे। इसलिए, सार्वजनिक वित्त को न केवल विकास के लिए संसाधनों को बढ़ाना है और संसाधनों का इष्टतम आवंटन प्राप्त करना है, बल्कि आय के उचित वितरण और रोजगार के अवसरों का विस्तार भी करना है। विकासशील देशों के संदर्भ में सार्वजनिक वित्त का यही कार्यात्मक दृष्टिकोण है। समय के साथ-साथ सरकार और उसकी गतिविधियों की प्रकृति में परिवर्तन के कारण सार्वजनिक वित्त की परिभाषा भी बदलती और संशोधित होती रहती है। सार्वजनिक वित्त का अर्थशास्त्र मूल रूप से सरकार के कामकाज के लिए धन जुटाने और उसके वितरण की प्रक्रिया से संबंधित है। इस प्रकार, सार्वजनिक राजस्व और सार्वजनिक व्यय का अध्ययन सार्वजनिक वित्त के

अध्ययन में मुख्य विभाजन है। लेकिन सार्वजनिक वित्त की इन दो सम्मिलित शाखाओं के साथ, संसाधनों को जुटाने और वितरित करने के संगठन की समस्या भी उत्पन्न होती है। इसे इस प्रश्न का भी समाधान करना होता है कि यदि सार्वजनिक व्यय राज्य के राजस्व से अधिक हो जाए तो क्या किया जाए। पहली समस्या के समाधान में, 'वित्तीय प्रशासन' की बात आती है। दूसरी समस्या में जाहिर है, सार्वजनिक उधार की प्रक्रिया या सार्वजनिक ऋण के तंत्र का अध्ययन किया जाना है। चूंकि सार्वजनिक ऋण और वित्तीय प्रशासन दोनों ही कई विशेष समस्याओं को जन्म देते हैं, इसलिए इन्हें पारंपरिक रूप से विषय की एक अलग शाखा के रूप में माना जाता है। सार्वजनिक राजस्व, सार्वजनिक

व्यय, सार्वजनिक ऋण, वित्तीय प्रशासन और सार्वजनिक बजट सार्वजनिक वित्त के मुख्य विषय हैं। सार्वजनिक वित्त का महत्व इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि सार्वजनिक वित्त किसी देश की वृद्धि और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह स्पष्ट है कि किसी देश की सरकार देश के औद्योगिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकती है, अधिक रोजगार के अवसर प्रदान कर सकती है, वांछित दिशा में निवेश और बचत को प्रोत्साहित कर सकती है और सार्वजनिक व्यय के माध्यम से सामाजिक लाभ बढ़ा सकती है। इसलिए यह देश की समग्र आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करता है। ♦

श्रद्धांजलि

प्रहरी के प्रथम संपादक का देहावसान



जन्म- 18 मई, 1941
मृत्यु- 28 जुलाई, 2024

श्री सिदेश्वर प्रसाद, पूर्व वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी का निधन दिनांक 28. जुलाई, 2024 को ए.जी. कॉलोनी, पटना के उनके निवास पर हो गया है। वे 'प्रहरी' पत्रिका के प्रथम संपादक थे। उनके कार्यकाल में 'प्रहरी' ने काफी प्रगति की। उन्होंने कार्यालय से प्रकाशित द्विभाषी न्यूज लेटर 'संघमित्रा' का भी संपादन कार्य किया। वे दिल्ली से प्रकाशित 'विचार दृष्टि' त्रैमासिक पत्रिका का भी लगभग एक दशक तक संपादन कार्य किया था। उन्होंने बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड पटना से 'वाग्वंदना' पत्रिका प्रकाशित किया जिसके कई अंक के संपादक रहे।

वे बिहार के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एसोसिएशन एवं अखिल भारतीय वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी संघ के उपाध्यक्ष इत्यादि के विभिन्न पदों को भी सुशोभित किया था।

उन्होंने दर्जनों पुस्तकें लिखी। वे एक कवि, समालोचक, साहित्यकार, संगठनकर्ता और चिंतक विचारक थे। वे हमेशा सामाजिक कार्यों एवं साहित्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहे। पटना के साहित्यिक माहौल को गढ़ने और मढ़ने में कई दशक तक कार्य किया। वे हमेशा नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने में आगे रहे।

स्वैक्षिक सेवानिवृत्ति के पश्चात बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के 6 वर्षों तक अध्यक्ष के रूप में भी कार्यरत रहे। उन्होंने रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य किया था साथ ही न्यूयार्क में आयोजित आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने वाले भारत के हिंदी सेवियों के दल में बिहार की तरफ से उन्होंने भाग लिया था।

उन्होंने राष्ट्र संघ मुख्यालय के सभागार में विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान "वैश्वीकरण, मीडिया और हिंदी" विषय पर आलेख का पाठ भी किया था।

प्रहरी परिवार उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ईश्वर से कामना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें एवं परिजनों को दुःख सहन करने का संबल प्रदान करें।

—संपादक मंडल

सूफी संतो की पवित्र भूमि मनेर



भूषण प्रसाद
सहायक पर्यवेक्षक

हमारा बिहार हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख और इस्लाम धर्मों के प्रमुख केंद्र के रूप में जाना जाता है। इनमें गया, बोधगया, राजगृह, बिहारशरीफ, नालंदा, पटनासाहिब, और मनेर की विशेष पहचान है।

मनेर, जिसे मनेरशरीफ के नाम से भी जाना जाता है, पटना से लगभग 24 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम भाग में गंगा और सोन नदियों के संगम के पास स्थित है। यह बिहार का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है। यह स्थान विशेष रूप से सूफी संतों की भूमि के रूप में जाना जाता है। मनेर किसी समय मुस्लिम संस्कृति का बिहार में सबसे पुराना केंद्र था। ग्यारहवीं शताब्दी में और उसके बाद भी यह सूफी फकीरों का आध्यात्मिक केंद्र बना रहा। यहाँ समूचे हिंदुस्तान से सूफी संत आया करते थे और सूफी मत के प्रसार के लिए विचार करते थे। यहाँ के लोग कहते हैं मनेर के पाक फकीरों की संगति में आने के लिए सूबेदारों, रईसों, मुगलों और पठान सामंतों में होड़ मची रहती थी। मध्ययुग के मुस्लिम इतिहास में मनेर का नाम बड़ी इज्जत के साथ लिया गया है। आज भी मुसलमानों के दिल में इसके प्रति बहुत आदर है। मनेर का इतिहास सूफी परंपरा और आध्यात्मिकता से गहराई से जुड़ा हुआ है, और यहां की पवित्रता और शांति देश-विदेश से श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करती है।

मनेर का सबसे प्रमुख धार्मिक स्थल बड़ी दरगाह है जहां हजरत मखदूम शरफुद्दीन अहमद यहिया मनेरी का मकबरा है। 13वीं शताब्दी में जीवित इस सूफी संत ने इस क्षेत्र में इस्लाम के शांतिपूर्ण संदेश का प्रसार किया और अपनी शिक्षा के



माध्यम से लोगों के दिलों में एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत किया। मखदूम शरफुद्दीन का मकबरा एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है, जहां हर वर्ष उर्स के अवसर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु इकट्ठे होते हैं। यहाँ छोटी दरगाह में मखदूम शाह दौलत का कब्र है। इस मकबरे की वास्तुकला इंडो-इस्लामिक शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें इस्लामी कला और स्थानीय निर्माण शैली का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह बड़ी खूबसूरत इमारत है। समूची दरगाह चुनार के सुंदर पत्थर से बनी है। यह बिहार के मकबरों में सबसे बढ़-चढ़ कर है। दरगाह एक चौकोर ऊंचे चबूतरे पर बनी है। इसका कमरा गोल है और चारों तरफ

बरामदा है। बरामदे की ऊंची छत में बड़ी कारीगरी से फूल-पत्ती और रेखागणित के चित्र से बने हुए हैं और कुरान शरीफ की आयतें भी बड़ी सुंदर रीति से काढ़ी गई हैं। पत्थर की इन नक्काशियों की तुलना प्रसिद्ध फतेहपुर सीकरी की उत्तम से उत्तम नक्काशियों से की जा सकती है। दरगाह के भीतर दोनों तरफ पत्थर के ऊंचे-ऊंचे खंभे हैं। उनके बीच में एक पतली दीवार है और उस पर बड़ी शानदार खड़ी कारनिस बनी हुई है। पंक्ति में ताखे भी बने हुए हैं जिनके मेहराब में पत्थर की ही जालियां हैं जो मन को मुग्ध कर देती हैं। समाधि को साया देता हुआ गुंबद बड़े अनोखे ढंग का है। मखदूम शाह दौलत की कब्र बीच में है, उसके पूरब की ओर उनकी बीवी की है। बादशाह जहांगीर के समय में इब्राहिम खां फतेहजंग बिहार और बंगाल का सूबेदार था। उसी ने इस दरगाह को बनवाया था। मखदूम शाह की कब्र के पांव के नीचे की ओर उसकी कब्र बाद में बनवाया गया है।

दरगाह के दक्षिण में एक तालाब है जो की लगभग पांच एकड़ में है। इसमें पानी उत्तर-पश्चिम

के कोने में सुरंग से आता था जो कि सोन नदी से जुड़ा था। लेकिन अब सोन नदी दूर हट गई है, इसलिए सुरंग की राह से पानी अब बरसात में ही आ पाता है।

मनेर का नाम भारतीय इतिहास में विशेष स्थान रखता है। यह स्थान बिहार की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता का प्रतीक है, जहां सूफी परंपरा ने मानवता के प्रति प्रेम, करुणा और आध्यात्मिकता के संदेश को फैलाया। साल में लगने वाले उर्स के मेले में हिन्दू मुस्लिम सभी यहाँ आते हैं और अपने लिए मन्नतें मांगते हैं। बिहार के कई राजनीतिक व्यक्ति यहाँ आकार चादर चढ़ाते हैं। यहाँ का "मोतीचूर का लड्डू" बहुत मशहूर है। जो भी पर्यटक यहाँ आते हैं वे इस लड्डू का स्वाद जरूर चखते हैं। मनेर की शांत और पवित्र वातावरण, यहां की ऐतिहासिक धरोहर, और सूफी संतों की शिक्षा इसे बिहार के प्रमुख स्थलों में से एक बनाती है। यह स्थल न केवल धार्मिक अनुयायियों के लिए, बल्कि इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए भी एक अद्वितीय स्थान है। ♦



हिन्दी हय हमर मातृभाषा



✍ कुमार शैलेंद्र चन्द
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अंग्रेजी सुनलय, फ्रेंच सुनलय, सुनलय चाइनीज भाषा हो

दुनिया में सब देश के हय अपन अपन भाषा हो

बनवारी हो हिन्दी नियन नय हय केकरो मातृभाषा

बनवारी हो हिन्दी हय हमर मातृभाषा

अंग्रेजी भाषा में तो हय बहुते कन्फुयजन हो

PUT के पुट कहहय BUT के बट हो

लिखय कुछ हय बोलय कुछ हय समझय हय कुछ और हो

भाषा हय ई हिन्दी के जो लिखय वही बोलय हो

बनवारी हो हिन्दी नियन नय हय केकरो मातृभाषा

बनवारी हो हिन्दी हय हमर मातृभाषा

बापू, अच्छा, आधार शब्द के जगह मिलले ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में

नारी शक्ति, आधार शब्द के खिताब मिललय दुनिया में

बनवारी हो हिन्दी नियन नय हय केकरो मातृभाषा

बनवारी हो हिन्दी हय हमर मातृभाषा

तकनीक से रोजगार के भाषा बन रहलय ह हिन्दी हो

नया नया एप लाके बढ़ रहले ह हिन्दी हो

चिकित्सा, शिक्षा, परामर्श क्षेत्र में भी बढ़ रहले ह हिन्दी हो

देशवा में सबसे ज्यादा बोले वाला हय हिन्दी हो

बनवारी हो हिन्दी नियन नय हय केकरो मातृभाषा

बनवारी हो हिन्दी हय हमर मातृभाषा



सरदार वल्लभभाई पटेल और लोकतंत्र



✍ संजीव कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वल्लभभाई पटेल, जिन्हें भारत के लौह पुरुष और सरदार पटेल के नाम से जाना जाता है, ने देश की आजादी के संघर्ष और उसके बाद के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्र निर्माण में अपने उल्लेखनीय योगदान के अलावा, सरदार पटेल लोकतंत्र पर भी गहन विचार रखते थे। उनकी लोकतांत्रिक सोच कितनी गहरी थी, यह उनकी संविधान सभा में दी गई सलाह से स्पष्ट होती है। उन्होंने कहा था कि मंत्री या मुख्यमंत्री होने पर यह कर्तव्य है कि वे अपने सचिव या चीफ सेक्रेटरी को निर्भीकता से अपनी राय व्यक्त करने की स्वतंत्रता दें। पटेल ने अपने सचिवों को यह स्वतंत्रता दी कि वे अपनी ईमानदार राय बिना किसी डर के व्यक्त करें, और यदि कोई सचिव ऐसा करने में असमर्थ हो, तो उसे त्यागपत्र देने को कहा। यह उनकी लोकतांत्रिक सोच और नैतिक बल की स्पष्ट झलक है।



राष्ट्रवाद के स्तंभ के रूप में लोकतंत्र

सरदार पटेल का मानना था कि लोकतंत्र केवल शासन का एक रूप नहीं बल्कि राष्ट्र के चरित्र का एक मूलभूत स्तंभ है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के सिद्धांतों के साथ, एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज के लिए मजबूत आधार प्रदान करें। उनके दृष्टिकोण में, लोकतंत्र केवल चुनावों की एक प्रणाली नहीं थी, बल्कि एक जीवंत और सहभागी प्रक्रिया थी जो प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र निर्माण की यात्रा में शामिल करती थी।

अनेकता में एकता

सरदार पटेल के सबसे प्रिय आदर्शों में से एक राष्ट्र की एकता थी। स्वतंत्रता के बाद, भारत विभिन्न सांस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों का एक विविध रूप था। पटेल ने इस विविधता से उत्पन्न संभावित चुनौतियों को पहचाना और राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य का समर्थन किया। उनका मानना था कि एक मजबूत लोकतंत्र एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य कर सकता है, जो विविध सांस्कृतियों, धर्मों, और मतों को सुनने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

विकेंद्रीकरण और स्थानीय शासन

सरदार पटेल विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वशासन के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि जब सत्ता का केंद्रीकरण समाप्त होता है, तब लोकतंत्र फलता-फूलता है और स्थानीय समुदायों को ऐसे निर्णय लेने का अधिकार मिलता है जो सीधे उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। महात्मा गांधी के

ग्राम स्वराज और पंचायतीराज के सिद्धांतों से प्रभावित होकर, पटेल ने पंचायतों और स्थानीय निकायों को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया।

स्थिरता और शासन

स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक वर्षों में, सरदार पटेल को 565 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने का कठिन कार्य सौंपा गया। उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण और नेतृत्व कौशल ने स्थिरता और सुशासन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। पटेल का मानना था कि लोकतंत्र के फलने-फूलने के लिए एक स्थिर और सुशासित राज्य आवश्यक है। उनके प्रयासों ने लोकतांत्रिक संस्थानों के फलने-फूलने और प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए एक आधार तैयार किया।

चुनौतियाँ और आलोचना

हालांकि सरदार पटेल की लोकतांत्रिक आदर्शों में अटूट आस्था थी, वे लोकतंत्र की चुनौतियों के प्रति अंधे नहीं थे। उन्होंने स्वीकार किया कि लोकतंत्र की सफलता व्यक्तिगत और सामूहिक अधिकारों के जिम्मेदार अभ्यास पर निर्भर करती है। पटेल ने लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के दुरुपयोग के प्रति आगाह किया जो राष्ट्र के ढांचे को कमजोर कर सकता है। उन्होंने व्यक्तिगत अधिकारों और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन की आवश्यकता पर जोर दिया।

सरदार पटेल के लोकतंत्र पर विचार एकजुट, समावेशी और मजबूत भारत के निर्माण की उनकी प्रतिबद्धता में गहराई से निहित थे। शासन के प्रति उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण, स्थानीय स्वशासन पर जोर और लोकतंत्र से जुड़ी चुनौतियों की पहचान उनके दृष्टिकोण को आज भी प्रासंगिक बनाती है। सरदार पटेल की विरासत लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता और एक समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण देश निर्माण के लिए प्रेरित करती रहती है। ♦

तुम मेरे पास हो



✍ शिव शरण सिन्हा

पूर्व संपादक 'प्रहरी'

कौन कहता है
कि तुम मेरे पास नहीं हो

मेरे दिल की धड़कनों में
फूलों के खिलने में
बादल की बूंदों में
चिड़ियों के चहकने में
भौरों के गुंजन में
फूलों के पराग में
शहद के स्वाद में
सूरज की लालिमा में
चाँद की चांदनी में
सबमें तुम हो

जो मुझे दिखता है
वही, जिसे दिख जाय
वो तुम हो

मेरी आधी बातों को
जो बिन बोले
पूरा कर ले
वो तुम हो

कौन कहता है
कि तुम मेरे पास नहीं हो
धूप-छाँव के खेल में
जीवन के संगीत में
सब साथ-साथ बीता है
बस अपनी बंशी बजने दो
मीठी आँहें भरने दो
कौन कहता है कि
तुम मेरे पास नहीं हो। ♦



कैसे काटूँ समय



✍ प्रशांत प्रखर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समय का चरित्र बड़ा दोहरा है। किसी के पास इतना है कि वह इसे काटने के लिए औजार ढूंढता फिरता है और किसी को कटा हुआ पीस भी मिल जाए तो अपने को भाग्यवान मानता है। कोई समय का धन तिजोरी में रखे रहता है तो कोई इसे मशीन में डालकर, इसका बुरादा बनाकर बाजार में पैसा बना लेता है। मैं कहता हूँ इतना पैसा लेकर कहाँ जाओगे। फिर अंत में तो लोग तुम्हारे क्रिया कर्म में भी समय नहीं देना चाहेंगे। ये सब चक्कर छोड़ो और समय को ऐसे काटो कि सोने के बिस्कुट के आकार में भी कम से कम तुम्हारे जेब में पड़ा हो।

मैं इसी समस्या के समाधान में कई दिनों से लगा हुआ हूँ। उस दिन बरामदे में बैठकर चाय की चुस्की लेता हुआ इस आसान से दिखने वाली समस्या के जड़ तक पहुँचने की कोशिश में लगा हुआ था और 'समय' नीचे फर्श पर बैठा हुआ मेरे साथ ही उनींदा सा चाय पीते हुए जम्हाई ले रहा था और मेरी वेबसी पर मुस्कुराते हुए खीसें निपोर रहा था। सच कहूँ तो मुझे बड़ी खीझ हो रही थी कि ये वन पीस में कैसे बैठकर मुझे चिढ़ा रहा है। इच्छा तो हो रही थी कि उसे काट-काट कर पीस-पीस में बदल डालूँ लेकिन वह बड़ा ढीठ था, मेरे पास से जा ही नहीं रहा था और मैं कुछ कर नहीं पा रहा था। मेरी चिढ़ बढ़ती ही जा रही थी। मैंने सोचा इस नामुराद से पीछा छुड़ाने के लिए अपने दैनिक क्रियाकलाप में लगना ठीक रहेगा। लेकिन फ्रेश होने से लेकर ड्यूटी जाने तक वो चिपका ही रहा। बीच में पत्नी ने खाने के लिए आवाज लगाई तो उसकी तरफ उसने भी देखा मुझे लगा कि अब ये कम से कम घर में ही रह जाए लेकिन हर दिन की भांति मेरे साथ टेम्पो में बैठ गया और मेरी तरह उन लोगों के 'समय' की कंपनी भी उसे मिल गई। सभी के समय बेकार से थे कोई भी 'चारमिंग लुक' वाला न था। सभी लोग शायद बेमतलब की भेड़ चाल का हिस्सा भर थे।

कार्यालय में काम तो बहुत था, सोचा था आज काम ऐसे करूँगा कि बॉस के तानों, झिडकियों की मिटटी पलीद कर दूँगा। भूल जाऊँगा कि इस ऑफिस में कोई काम जल्दी नहीं होते, सारे दाग को डेटोल से धो दूँगा। लेकिन ऑफिस पहुँच कर सारी सनक उतर गई। सारे काम छोड़कर मंडली के साथ चाय पान को निकल पड़ा। गप शप, हंसी मजाक और चाय पानी में मैंने 'समय' को भूलने की पूरी कोशिश की लेकिन जैसे ही सामने नजर पड़ी उसकी चिर परिचित मुस्कान ने सारा मूड ऑफ कर दिया। मैं तंग आ चुका था कि तभी मित्रों में से एक बोल पड़ा अपने विभाग के कमल सर के पास तो सभी समस्याओं का समाधान रहता है आज तक ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने कोई भी मुश्किल सवाल को बिना हल किये छोड़ा हो। मुझे आशा की किरण दिखाई दी। पता ठिकाना पूछ कर अगली छुट्टी में उनके यहाँ जाने की योजना मन ही मन ऐसे बनाई ताकि इस नामुराद को भनक न लगे।

शाम को फिर उसी प्रकार घर आने पर बीच में उसे अपने जैसे नामुरादों से भेंट हुई और मुझे भी रंग बिरंगे बेचौन आत्माओं, निठल्ले देवताओं से पाला पड़ा लेकिन ढंग का न तो 'समय' मिल पाया और न 'जीवात्मा' घर पर पत्नी की गलतफहमी का फायदा उठाकर काम करके पहाड़ तोड़ देने सी 'फीलिंग' दिखाकर चाय नाश्ता कर लिया। मेरे इस कृत्य से समय खुश न था और मैं आदतन किसी और को खुश न देखकर थोड़ा खुश हुआ। लेकिन ये खुशी अल्पकालिक थी। चाय नाश्ता के बाद बच्चों को होमवर्क कराने बैठा तो उनकी कापियों पर काफी काट छांट टीचर ने की थी, कान मरोड़ा तो बच्चों ने कहा पापा

आप ही कि हैण्ड राइटिंग हैं। आप ही ने तो होमवर्क किया है। मैं चुप हो गया लेकिन 'समय' ठठाकर हंस पड़ा था।

उसकी भंगिमा से लग रहा था मैं बच्चों को कमजोर कर रहा हूँ उनसे उनका संघर्ष छीन रहा हूँ लेकिन वो बेवकूफ़ ये नहीं जानता था कि इस तरह से मैंने घर में कितना 'संघर्ष' बचाया है वर्ना यदि पत्नी करवाती तो बच्चे डांट और मार सहते और मैं ताना।

होमवर्क के बाद टी.वी. के पास बैठकर देश विदेश की समस्याओं पर आधारित न्यूज डिबेट देखने बैठा तो 'समय' कनखियों में मुस्काया। फिर बेनतीजा डिबेट खत्म होने पर पत्नी ने रिमोट छिनकर धारावाहिक लगा दिया। उसमें चल रहे सास-बहु, पति पत्नी के बीच जटिल सम्बन्ध और समस्याओं की दुनिया में हम डूब गए और इधर 'समय' के पौ बारह हो गए। अब वो नाच रहा था। साले ने नाचते नाचते बारह बजा दिए फिर हमलोग सोने चले गए। फिर सुबह से वही खट पट। खैर छुट्टी का दिन भी आया और मैं चल पड़ा कमल बाबू के निवास पर जहाँ आज मुझे 'समय' वाली समस्या का समाधान मिलना था। मैं थोड़ा टू टाइट ड्रेस पहनकर जैसे ही चलने को हुआ मेरे साथ बेकार सी लिबास में वो (समय) भी चल पड़ा। मैंने भी सोचा चल बेटा! आज तेरा भी इलाज हो ही जाए। मैंने भी उसे देखकर एक 'हैप्पी' सी स्माइल दे दी जिसे उसने लपक लिया। आज टैक्सी में बैठकर जा रहा था तो उसे ड्राइवर को छोड़कर किसी की कंपनी नहीं मिली थी और वो अटेंशन में आ गया था। कमल सर के यहाँ पहुँचा तो उनका अर्दली तैनात था जिसे मैंने बताया कि साहब से मिलने आया हूँ और शहर की सबसे महँगी मिठाई की दूकान के डब्बे में सजाकर रखी हुई मिठाई जब भिजवाई तो पर्ची में लिखे परिचय को पढ़कर साहब ने मुझे आसामी फांसने वाला समझकर अन्दर बुलवा भेजा।

साहब अखबार पढ़ने में तल्लीन नजर आ रहे थे। बड़े लोग कभी भी खाली नहीं बैठते। बैठते भी हैं तो कम से कम दीखते नहीं। अगर वे ही खाली हो गए तो भरा हुआ क्या रह जाएगा। मैं हाथ जोड़कर उनकी नजर पड़ने की प्रतीक्षा करने लगा। 'समय' मुस्कुराए जा रहा था कि तभी

साहब का 'समय' भी उनके नौकर के साथ कमरे में आते दिखा। नौकर के हाथ में तश्तरी में रखा पानी का गिलास था और साथ में चल रहा 'समय' सूटेड बूटेड था। लेकिन चेहरे से मनहूस सा ही लग रहा था 'स्मार्ट' न था। मुझे लगा कोई नहीं कम से कम सेवा करने वाला समय तो है। लेकिन नौकर नजदीक आकर जैसे ही पानी का गिलास आगे बढ़ाता कि उनके 'समय' ने गिलास लेकर सारा पानी अखबार पर डाल दिया। साहब चिहूंक उठे। झेंपकर बोले अरे आप कब से खड़े हैं? बैठिये, सिधारने का प्रयोजन सिद्ध कीजिए। उनके 'समय' के कारस्तानी ने मुझे ना उम्मीद सा तो किया था लेकिन मैंने इसे मेरे वाले 'समय' के सत्संग का असर समझकर उनसे अपनी समस्या कहने की शुरुआत की— 'मामला समय का है'। इतना सुनकर वो लेक्चर बाजी पर उतर आए। कहने लगे— समय का सदुपयोग करना चाहिए। आपके पास भी दिन के 24 घंटे होते हैं और बड़े लोगों के पास भी लेकिन वो इसका सदुपयोग करके कितना आगे चले जाते हैं और आप कितना पीछे रह जाते हैं। मैंने उन्हें शांत करते हुआ कहा ये बातें मैं जानता हूँ सर। लेकिन मुझे समय के सदुपयोग से ज्यादा दिलचस्पी इस बात में है कि मैं इसे काट कर छोटे छोटे टुकड़े बनाकर इस प्रकार जेब में रख लूँ कि मेरे पास ये हमेशा रहे और जब जी चाहे इसका उपयोग कर लूँ। मुझे इसके लिए किसी पर निर्भर न रहना पड़े। मेरी बात समझकर अब वो थोड़े ठंडे पड़े और बोले— 'समस्या पेचीदा है। इस मामले को लेकर कभी किसी ज्योतिषी से मिले हो?'

मैं— 'गया था लेकिन उससे मेरा 'समय' और अनियंत्रित और बेकार हो गया। बड़े अरमान लेकर आपके पास आया हूँ।

वे— अच्छा तो तुम्हारी समस्या ज्योतिषी के पास जाकर भी ठीक न हुई? तो फिर तुम सही जगह पर पहुँचे हो।

अब बात उनकी समझदानी में घुस गई थी सो आगे बोले— 'मामला गंभीर है और समस्या वैश्विक। लेकिन चूँकि हर समस्या का समाधान होता है वैसे ही इसका भी

होना चाहिए'। फिर सीलिंग फैन की ओर ऐसे देखने लगे मानो पंखे से हवा नहीं समाधान बहेगा। शांति से मैं उनके चेहरे पर देख रहा था कि शायद अब कुछ कहें कि उन्होंने कहा— 'देखो ये समस्या बहुत टेढ़ा है और पूरी दुनिया से जुड़ा है। ऐसी समस्या खोजने के लिए तो तुम्हें कोई राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिलना चाहिए। अपने देश में समस्या ढूंढने वाला एक पूरा तंत्र है जो सरकार बनाने बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है मुझे तो डर है कि कहीं वे तुम्हें पकड़कर ले न जाएँ। मैं इस विषयांतर से ऊबकर बोला आप कृपाकर समस्या का समाधान बताइए बस। मुझे किसी पुरस्कार या सरकार से कोई लेना देना नहीं मुझे तो समय के टुकड़े टुकड़े कर जेब में रखने का फार्मूला चाहिए बस अब वे थोड़े संजीदा हुए और कान में कहा किसी बाबा के पास गए थे? वे तो आजकल ज्योतिषी से भी अच्छी डीलिंग करते हैं। मेरे ना में सर हिलाने पर उन्होंने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं कोई परले दर्जे का मुख रहा होऊँ। फिर कहा किसी बाबा के पास जाना बहुत जरूरी है समस्या का समाधान मिले न मिले लोगों की नजर में तुम बड़े जरूर बन जाओगे। आजकल बाबाओं का ही दौर है। अब मेरे सब्र का बांध टूट रहा था। मैंने कहा शायद मेरी समस्या का समाधान आपके पास है ही नहीं ये बहुत आसान सा हथकंडा है किसी से काम निकलवाना हो और वो ऐसे हाथ न आये तो चुनौती उसके सर पर दे मारो। चुनौती के बोझ से दबने के बाद वो आपके काम के लेवल में आ जाएगा और आपका मतलब सधने की सम्भावना बढ़ जाएगी।

अब उन्होंने शुरू किया आज हर कोई अपने-अपने समय का दास बन गया है। उसके पास चैन से भरपूर जीने की वजह नहीं है और अगर है भी तो 'समय' ने उस 'वजह' का अपहरण कर फिरौती में उसका 'चैन' ले लिया है। हमें इसके लिए एक अभियान छेड़ना चाहिए और अपना समय जहाँ भी दिखे उसे बोरी या कपड़े से बंद कर के पटक पटक कर तोड़ देना चाहिए फिर उसके टुकड़े इकट्ठे कर जेब में रख लेना चाहिए। फिर जैसे चाहे जब चाहे जेब से निकालो और उपयोग करो।

उनकी बातें सुनकर मैं बोला क्या हर आदमी ऐसा कर जाएगा। फिर बोरी या कपड़े का मैटेरिअल भी तो ऐसा होना चाहिए कि समय पकड़ में आए और फिर उसे पटकने के लिए ताकत भी तो बहुत चाहिए।

वे — 'मैटेरिअल की चिंता तुम मत करो मैं उसके लिए टेंडर निकलवा दूंगा, चीप एंड बेस्ट मैटेरिअल मिल जाएगा, रही ताकत की बात तो ये यंत्र युग है मशीन का जुगाड़ करना पड़ेगा। मैं— 'ये सब कहने में आसान है करने में नानी याद आ जाएगी। अभियान कैसे चलेगा? फण्ड कहाँ से आएगा?'

गंभीर मुद्रा बनाकर थोड़ी देर सीलिंग फैन से हवा की जगह आईडिया लेकर वे बोले— इसके लिए तुम्हें किसी 'लेखक' या 'कवि' टाइप के बेकार से बैठे रचनाकार और कुकुरमुत्ते की तरह उगे हुए एन.जी.ओ. में से कुछ को तैयार करना होगा। लेखक तिल का ताड़ बना सकता है और एन.जी.ओ. ताड़ को तिल बनाकर उससे तेल निचोड़कर उस पर जन कल्याण का लेबल चिपकाकर मार्केट में खपा सकता है। सोचो तुम्हारी समस्या भी खत्म होगी और साथ ही कितना फायदा होगा।

मेरी आँखों में आशा की चमक आई लेकिन बड़ी देर से खड़े मेरे समय ने मुझे देखकर एक रहस्यमय मुस्कान मेरी ओर ऐसे फेंक दी कि मैं लपक न सका और उसकी मुस्कान किसी बम की तरह मेरे और साहब के बीच गिरकर फट गई।

इन बातों से अनजान साहब ने मेरे पास आकर कान में फुसफुसाकर कहा— अपने साथ-साथ मेरे कमीशन का भी ख्याल रखना इधर काफी कड़की चल रही है 'समय' कुछ ठीक नहीं चल रहा।

अचानक मेरे 'समय' का कद बढ़के छत से जा लगा और उसने मुझे पकड़कर अपनी पैंट की जेब में टूंस लिया और लम्बे लम्बे डग भरता हुआ उनके कंपाउंड से बाहर निकलकर एक अनजान से कभी न खत्म होने वाले बोझिल रास्ते की तरफ चल पड़ा।—

सचिवालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय,
पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर।

वार्षिक खेल-कूद महोत्सव 2023-24



✍ शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी

आजकल के भाग—दौड़ और तनाव भरी जिन्दगी में खेलों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। खेल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि मानसिक तथा सामाजिक स्वास्थ्य को सुधारने में भी मदद करता है। यह टीमवर्क को सुधारता है, सहयोग और संवाद को प्रोत्साहित करता है तथा नकारात्मकता को कम करता है। खेलने से हमारी निर्णय लेने की क्षमता बेहतर होती है और समस्याओं का समाधान ढूँढने में सहायता मिलती है। खेल हमें अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रेरित करते हैं और हमारे आत्मविश्वास को भी मजबूत करते हैं। इन्हीं सारे महत्त्व को देखते हुए मनोरंजन क्लब, महालेखाकार भवन, पटना, बिहार के तत्त्वाधान में दिनांक 01 मार्च 2024 से 22 मार्च 2024 तक वार्षिक खेल-कूद महोत्सव, 2024 का आयोजन किया गया।

वार्षिक खेल महोत्सव में बिहार राज्य अवस्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी 6 कार्यालयों यथा 1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार 2. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार 3. कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), बिहार, पटना 4. कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), शाखा कार्यालय, पटना 5. कार्यालय, महानिदेशक (लेखापरीक्षा), रक्षा सेवाएं, पटना तथा 6. कार्यालय, महानिदेशक (लेखापरीक्षा), पूर्व मध्य रेल, हाजीपूर, बिहार के अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया।

वार्षिक खेल 2024 के दौरान अधिकारियों/ कर्मचारियों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों हेतु विभिन्न

श्रेणियों में बैडमिन्टन, टेबल टेनिस तथा कैरम की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं साथ ही सभी 6 कार्यालयों की एक-एक टीम बना कर टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया।

खेलों की समय-सारणी इस प्रकार निर्धारित की गई थी ताकि सामान्य कार्यालयीन गतिविधियाँ प्रभावित न हो। इन खेलों का आयोजन शनिवार, रविवार, सार्वजनिक अवकाश तथा कार्यालय अवधि के पश्चात (संध्या 06 बजे के बाद) किए गए थे। विभिन्न खेलों से संबंधित विवरण निम्नवत है:

कैरम चैम्पियनशिप 2024

दिनांक 08.03.2024 से दिनांक 10.03.2024 तक श्री सुजय कुमार सिन्हा, उपमहालेखाकार के मार्गदर्शन में कैरम चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु 4 अधिकारियों की एक टीम बनायी गयी थी जिसमें सुश्री कविता रानी, स.ले.प.अ, श्री विजय राय, पर्यवेक्षक (A&E), रत्नेश कुमार, व.ले.अ. (A&E) तथा धीरज कुमार नंबर-3, स.ले.प.अ. शामिल थे। प्रतियोगिता के विजेताओं से संबंधित संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

प्रतियोगिता की श्रेणी / आयु वर्ग	विजेता	उपविजेता	तृतीय स्थान	सांत्वना पुरस्कार
अंडर 12 (बालक)	आरव	रुद्र प्रताप	अभिराज	अभिराज निलेश
अंडर 12 (बालिका)	आशी	जयश्री वरदा		
12+ (बालक)	वंश राज	दिव्यांशू कुमार	अर्णव कुमार	आयुष कुमार
12+ (बालिका)	अन्वेशा भार्गवी	एकता कुमारी	भाविनी प्रतीक्षा	श्वेता कुमारी
पुरुष	राजेश ठाकुर	डावर शेख	राजीव कुमार	प्रवीण कुमार
महिला	ममता सिंह	अंशु प्रिया	श्वेत निशा	अनुपमा द्विवेदी

टेबुल-टेनिस प्रतियोगिता

दिनांक 17.03.2024 से दिनांक 19.03.2024 तक श्री ओंकार, उपमहालेखाकार के मार्गदर्शन में टेबुल-टेनिस चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु 4 अधिकारियों की एक टीम बनायी गयी थी जिसमें श्री संजीव शंकर, व. ले. प., श्रीमती मौसमी चटर्जी, व. ले. प., श्री संजय कुमार, व. ले. प तथा श्री अतानु चटर्जी, व. लेखाकार शामिल थे। प्रतियोगिता के विजेताओं से संबंधित संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

प्रतियोगिता की श्रेणी/ आयु वर्ग	विजेता	उपविजेता	तृतीय स्थान	सांत्वना पुरस्कार
सिंगल (महिला)	चिमरण कलिता	अमृता सिंह	कविता रानी	अंशु प्रिया
सिंगल (पुरुष)	अमित कुमार	मनोरंजन कुमार	श्यामजी दुबे	विशाल कुमार
सिंगल (बच्चे)	अनमोल कुमार	अर्णव कुमार	दिव्यांशू कुमार	अंकित कुमार

बैडमिन्टन चैम्पियनशिप

दिनांक 12.03.2024 से दिनांक 16.03.2024 तक श्री शिव शंकर, वरिष्ठ उपमहालेखाकार के मार्गदर्शन में बैडमिन्टन चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु 5 अधिकारियों की एक टीम बनायी गयी थी जिसमें श्री अनुज कुमार सिंह, व. ले. प., मो. शफक नवाब खान, व. ले. प., श्री रितेश रंजन, व. ले. प., सुश्री प्रतिभा कुमारी, स. प. तथा श्री यमन रंजन, व. लेखाकार (A&E) शामिल थे। प्रतियोगिता के विजेताओं से संबंधित संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

प्रतियोगिता की श्रेणी/आयु वर्ग	विजेता	उपविजेता
अंडर 12 (बालक)	अर्णव तिवारी	अंकित
13-18 (बालक)	कृष सिंह	रेहान नवाब खाँ
18-25 (बालक)	कार्तिक	उज्ज्वल अग्रवाल
अंडर 12 (बालिका)	आव्या	सोफिया नाज
13-18 (बालिका)	अन्वेशा	रित्सिका
18-25 (बालिका)	खुशी	श्वेता
सिंगल (महिला)	पुष्पलता	जया चाँदनी
सिंगल वेट्रन (महिला)	रकिला रफी	कविता रानी
डबल (महिला)	रकिला रफी – पुष्पलता	कविता रानी – अमृता सिंह
सिंगल (पुरुष)	सुधीर कुमार	सोनल स्वराज
सिंगल वेट्रन (पुरुष)	पुष्कर कुमार	शिव शंकर
डबल वेट्रन (पुरुष)	पुष्कर कुमार – शिव शंकर	गौतम कुमार – पवनसुत पासवान
मिक्स डबल	शिव शंकर – पुष्पलता	कुमार चंद्रेश – जया चाँदनी

क्रिकेट टूर्नामेंट 2023-24

दिनांक 16.03.2024 से दिनांक 17.03.2024 तक आयोजित इस प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु श्री कुमार चंद्रेश, निदेशक के मार्गदर्शन में श्री शंकरा नंद झा, हिंदी अधिकारी, विजय प्रकाश दुबे, स.ले.प.अ., श्री अखिलेश शुक्ला, व.ले. प., श्री दिवान रेहान खान, व.ले.प., श्री अश्विनी कुमार, व. लेखाकार तथा श्री राजेश कुमार, व.लेखाकार अधिकारियों की एक टीम बनायी गयी थी। क्रिकेट टूर्नामेंट हेतु बिहार राज्य अवस्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सभी 6 कार्यालयों

यथा 1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, 2. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, 3. कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), बिहार, पटना 4. कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), शाखा कार्यालय, पटना 5. कार्यालय, महानिदेशक (लेखापरीक्षा), रक्षा सेवाएं, पटना तथा 6. कार्यालय, महानिदेशक (लेखापरीक्षा), पूर्व मध्य रेल, हाजीपूर, बिहार की एक-एक टीम बनायी गयी थी। सभी 6 टीमों को दो ग्रुपों में बांटा गया था। ग्रुप ए में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा तथा रेलवे लेखापरीक्षा की टीम को रखा गया था। जबकि ग्रुप बी में महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), रक्षासेवाएं लेखापरीक्षा तथा केंद्रीय लेखापरीक्षा की टीम को रखा गया था।

क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन सुश्री पुष्पलता, व. उपमहालेखाकार के कर कमलों से किया गया। उद्घाटन मुकाबले में टॉस जीत कर प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा) की टीम ने पहले गेंदबाजी का निर्णय लिया। दोनों ही ग्रुप की सभी टीमों अपने समूह की बांकी टीमों के साथ आपस में एक-दूसरे के साथ मैच खेली तथा दोनों ही समूह से टॉप की एक-एक टीम को फाइनल में खेलने का मौका मिला। ग्रुप ए में सभी टीमों ने एक-एक मैच जीता परंतु बेहतर रन औसत के आधार पर वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा की टीम फाइनल में पहुंची। ग्रुप बी से महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की टीम टॉप पर रही और उसे फाइनल खेलने का मौका मिला।

दिनांक 17.03.2024 को जगजीवन रेलवे स्टेडियम खगौल में खेले गए रोमांचक फाइनल मुकाबले में महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की टीम ने वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा की टीम को हराते हुए फाइनल मुकाबले को जीत लिया। पुरे टूर्नामेंट में गेंद एवं बल्ले के साथ शानदार प्रदर्शन करने वाले कुमार चंद्रेश, निदेशक को मैन ऑफ द टूर्नामेंट से पुरस्कृत किया गया। ♦

सेवानिवृत्ति

“उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाए”
—बशीर बद्र

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार परिवार के निम्नलिखित कार्मिक अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। प्रहरी परिवार उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करता है।

क्र.स.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1..	दीपू कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2024



श्रद्धांजलि



स्व. कुमार नीरज वरिष्ठ लेखापरीक्षक **तिथि- 20.07.2024**

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना में कार्यरत श्री कुमार नीरज, वरिष्ठ लेखापरीक्षक का असामयिक निधन हो गया। प्रहरी परिवार उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ईश्वर से कामना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें एवं परिजनों को दुःख सहन करने का संबल प्रदान करें।

हिंदी पखवाड़ा-2024



हिंदी पखवाड़ा-2024

